आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का जीवन परिचय

पूर्व नाम : पारसचंद जैन
पिता एवं माता: श्री शिखरचंद जैन, श्रीमती मायाबाई जैन
जन्म: 11 सितम्बर 1967, फुटेरा कलां, जिला दमोह (मध्यप्रदेश)
शिक्षा: बी.ए., डिग्री कॉलेज, दमोह (मध्यप्रदेश)
ब्रह्मचर्य व्रत: 19 दिसम्बर 1984, अतिशय क्षेत्र, पनागर, जबलपुर(म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा: 8 नवंबर 1985, सिद्धक्षेत्र अहारजी, टीकमगढ़ (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा: 10 जुलाई 1987, अतिशय क्षेत्र थूबोन जी, अशोकनगर (मध्यप्रदेश)
मुनि दीक्षा : 31 मार्च 1988, महावीर जयंती, सिद्धक्षेत्र सोनागिरी जी, दतिया (मध्यप्रदेश)
दीक्षा गुरु: संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज
आचार्य पद: 25 जनवरी 2015, इंदौर (समाधि पूर्व आचार्य श्री सीमंधरसागर जी महाराज द्वारा)

कृतियाँ एवं रचनाएँ

आचार्यश्री की साहित्य साधना अत्यंत व्यापक और प्रेरणादायी है। उन्होंने दो दर्जन से अधिक कृतियों के सृजन किया है, जिनके माध्यम से आचार्य श्री ने जैन दर्शन के गूढ़ तत्त्वों को सरल और व्यवहारिक रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

1. आगम ग्रंथ- आगम अनुयोग भाग (1-2), जैनागम संस्कार (हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, तमिल कन्नड़), आध्यात्मिक प्रवचन, पर्युषण पीयूष।

2. काव्य व शतक- तीर्थोदय काव्य, सदाचार सूक्ति काव्य, मोक्षप्रदायक काव्य (आत्मोद्धार शतक, सन्मार्ग प्रभावना काव्य, तीर्थंकर स्तुति शतक, सम्यक् ध्यान शतक, श्री अंतादि शतक, गुरु-गुण महिमा काव्य, आशीर्वाद शतक, धर्म भावना शतक, अध्यात्म समयोदय काव्य) ज्ञानवर्धनशतक आदि।

3. पद्यानुवाद- पद्यानुवाद मंजरी (गोमटेश थुदी, भक्तामर स्तोत्र, द्रव्यसंग्रह, इष्टोपदेश, समाधितंत्र, वारसाणुवेक्खा, तत्त्वसार, प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)

4. अन्य विशेष- आर्जव कविताएँ, लोक कल्याण विधान, ॐ योग ध्यान आदि।

विशेष उपलब्धियाँ-

आचार्य श्री को Chania International University द्वारा भारतीय दर्शन, जैन आगम के प्रचार-प्रसार एवं सामाजिक जागरण के क्षेत्र में किए गये अद्वितीय योगदान हेतु Doctrate of Philosophy की मानद उपाधि प्रदान की गई। आचार्य श्री आर्जवसागर जी को अनेक आध्यात्मिक, साहित्यिक एवं मानवीय योगदान के लिए यूएसए, लंदन, एशियन, यूएन, इंडिया, गिनीज, इंटरनेशनल, वर्ल्डवाइड बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के संस्थानों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से अलंकृत किया गया है। इसके माध्यम से पूरे विश्व में आचार्य भगवन् की कृतियों की कीर्ति सर्वव्यापी फैली है। अनेक संस्थाओं द्वारा आपको ''ब्रह्माण्ड के देवता'', ''जैन धर्म के गौरांवित संत'', ''अहिंसक प्रचारक'', ''आध्यात्मिक संत'', ''आहारौषध विज्ञान के ज्ञाता'', ''साहित्यिक प्रतिभा संपन्न'', ''20 वीं सदी के हिंदी साहित्य के सर्वोच्च शिखर'', ''विश्व के भगवान'', ''वर्ल्ड गॉड'' जैसी उपाधियाँ देकर स्वर्ण भारत सम्मान राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरस्कार, भारतीय रत्न अवार्ड, पद्मश्री गौरव सम्मान आदि अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया है।

प्रवचन और प्रेरणाएँ-

डॉ. आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज अपने ओजस्वी, तार्किक और हृदयस्पर्शी और आध्यात्मिक प्रवचनों के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके प्रवचन अनेकों जेल, स्कूल, विश्वविद्यालय, आश्रम आदि अनेक संस्थानों में भी हुए हैं। आचार्य श्री का उपदेश समाज में नशामुक्ति, शाकाहार, नैतिकता, अहिंसा और शिक्षा के प्रसार का माध्यम बन चुका है। आचार्य श्री विशेष रूप से जनमानस को सम्यग्दृष्टि बनाकर संयम, सदाचार और आत्मानुशासन की ओर प्रेरित करते हैं।

आध्यात्मिक योगी, बहुभाषाविद्, 20 शिष्यों के दीक्षा दाता आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज का जीवन तप, त्याग, साधना और सेवा का आदर्श उदाहरण है। समाज में उनकी साधना के माध्यम से आध्यात्मिकता, संस्कृति और मानवीय मूल्यों पर निरंतर प्रकाश फैल रहा है। गुरुदेव ने देश की संस्कृति की संपदा को उद्घाटित करते हुए कीर्तिमान स्थापित कर भारत देश को गौरांवित किया है।

गुरुपूजन

आरती, भजन

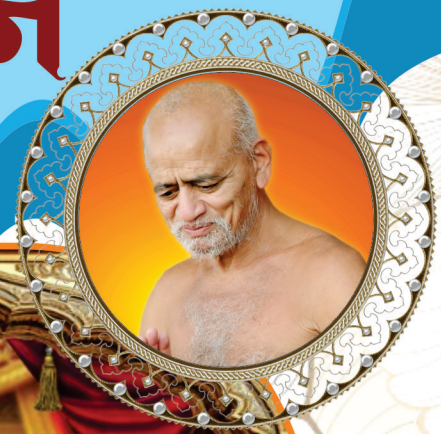

आचार्य भगवन् श्री 108 आर्जवसागर जी महामुनिराज

आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज से गुरुवर आर्जवसागर जी महाराज का मिलन 2014

गुरुवर आर्जवसागर जी के लिए आचार्य पद से अलंकृत करते हुए आचार्य सीमंधरसागर जी महाराज 2015

साहित्यिक प्रतिभा संपन्न आचार्य श्री आर्जवसागर जी की विशेष उपलब्धियाँ

संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित धर्म प्रभावक, अध्यात्म योगी आचार्य गुरुदेव श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज पर पूजन, आरती एवं भजन

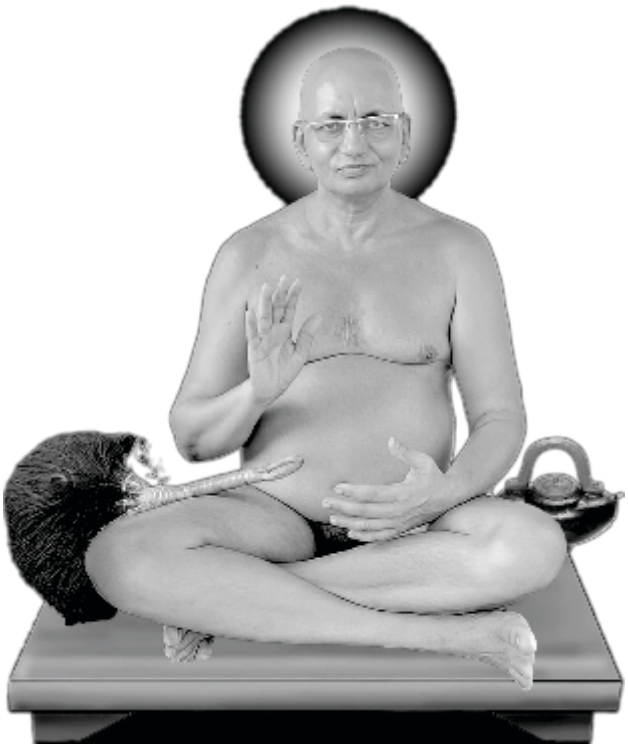

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज

जन्म-11-09-1967 क्षुल्लक दीक्षा-08-11-1985

एलक दीक्षा-10-07-1987 मुनि दीक्षा-31-03-1988

आचार्य पद-25-01-2015

संस्करण : छटवाँ 2025

प्रकाशक : आर्जव-तीर्थ एवं जीव संरक्षण-ट्रस्ट
भोपाल (म.प्र.)

संपादन : इंजी. बहिन ऋषिका जैन, दमोह
(B.E., M.A., Ph.D.)

पावन संदर्भ : भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव,
दीपावली पर्व 2025 उदयनगर, इंदौर (म.प्र.)

प्राप्ति स्थान : आर्जव-तीर्थ एवं जीव संरक्षण-ट्रस्ट भोपाल
मो. : 9425601161
Website : www. aarjavvani@gmail.com

पुण्यार्जक : प.पू. मुनिश्री 108 साक्ष्यसागरजी महाराज,
प.पू. मुनिश्री 108 निव्रतसागरजी महाराज
के गृहस्थावस्था परिवार जन
राजाराम-श्रीमती शान्ति जैन
खरगौन (रजवाड़ा), बरेली, रायसेन (म.प्र.)

मुद्रक : पारस प्रिन्टर्स,
एम.पी. नगर, भोपाल
दूरभाष : 0755-4260034
मोबाइल : 98262-40876

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	रचयिता	पृष्ठ
	पूजन संग्रह		
1.	गुरुवर का वैराग्य अनुपम	बहिन ऋषिका जैन, दमोह	2
2.	आर्जवसागर सूरि यतिवर	,,	7
3.	गुरुवर की वाणी सुनकर	,,	12
4.	धर्म प्रभावक! संत महान!	,,	17
5.	धर्म प्रभावक! परमोपकारी!	,,	22
6.	गुरु महावीर सम जीवन...	बहिन ऋषिका जैन, दमोह	27
7.	भव्य जनों के तारक...	आर्यिका प्रतिभामति जी	32
8.	आर्जव गुण के श्रेष्ठ सु-धारी..	कवि शरद अजमेरा भोपाल	37
9.	धन्य है जीवन गुरु आपका..	हनुमान सिंह गुर्जर जैन	43
	आरती संग्रह		
1.	विद्यार्जव गुरु नाम है	बहिन ऋषिका जैन, दमोह	50
2.	आर्जवसागर जी महाराज	,,	51
3.	धरती खड़ी अम्बर खड़ा	,,	52
4.	दीपों की थाल सजाई	,,	53
5.	गुरुवर को शीश नवायें	,,	54
6.	जय जय गुरुवर भक्त पुकारें	आर्यिका प्रतिभामति जी	55
7.	हम लेकर घृत के दीप	,,	56

क्र.	विषय	रचयिता	पृष्ठ
	भजन संग्रह		
1.	गुरु की छाया	बहिन ऋषिका जैन, दमोह	58
2.	आर्जव गुरु के ज्ञान की	,,	59
3.	धर्म प्रभावक उपकारी, गुरुवर	,,	60
4.	हे आत्म सरोवर! परमोपकारी!	,,	61
5.	आर्जवसागर गुरु धर्म की शान है	,,	62
6.	हे गुरुवर! तुम हमको	,,	63
7.	जिनधर्म की हैं शान	,,	64
8.	व्रत संयम को धारण करके	,,	65
9.	आर्जव गुण के धारी गुरु	,,	66
10.	वन्दे गुरुवरं बोलो आर्जवसागरं	,,	67
11.	हम सबके भाग्य खिले	,,	69
12.	गुरुवर को नमन हो	,,	70
13.	गुरुवर की कृपा निराली	,,	71
	गुरु-वंदना		
1.	गुरु-संस्तुति	बहिन ऋषिका जैन, दमोह	72
2.	आर्जव गुरु-वंदना (स्तुति)	,,	73
3.	गुरु स्तुति	,,	74
4.	गुरु श्री आर्जवसागर अष्टक	पं.लालचंद राकेश	75

पूजन संग्रह

विद्यार्जव गुरु-पूजन

(लय- आल्हा धुन.....)

// स्थापना //

गुरुवर का वैराग्य अनुपम, करते नयमय आगम चिंतन।
महावीर की प्रतिमूर्ति सम, जिन आगम के ज्ञानी अनुपम।
जिनके तप की गरिमा गायें, जन मानस भी सब हर्षायें।
हम सब पूजन करने आये, मन में भाव संजोकर लाये॥

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्र! आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्।

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्र! आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्र! आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

// जल //

क्षीरोदधि का जल हम लाये, भक्ति भाव से चरण चढ़ाये।
विद्यार्जव गुरु छाया मिलतीऽऽऽ-2, गुरु कृपा से झोली भरती॥

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्राय आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

// चंदन //

संसार ताप के मेटन आये, शीतलता अब मुझे मिल जाये।
विद्यार्जव गुरु छाया मिलतीऽऽऽ-2, गुरु कृपा से झोली भरती॥

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्राय आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

// अक्षत //

उज्ज्वल तंदुल अक्षत लाये, गुरुवर के हम चरण चढ़ाये।
विद्यार्जव गुरु छाया मिलतीऽऽऽ-2, गुरु कृपा से झोली भरती॥

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्राय आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

// पुष्प //

गुरुवर को हम शीश नवाएँ, प्रासुक निर्मल पुष्प चढ़ाएँ।
विद्यार्जव गुरु छाया मिलतीऽऽऽ-2, गुरु कृपा से झोली भरती॥

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्राय आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

// नैवेद्य //

मेटो क्षुधा नैवेद्य चढ़ाएँ, गुरु चरणों में शीश झुकायें।
विद्यार्जव गुरु छाया मिलतीऽऽऽ-2, गुरु कृपा से झोली भरती॥

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्राय

आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

// दीप //

मोह अंधेरा अब मिट जाये, दीप समर्पण करने आये।
विद्यार्जव गुरु छाया मिलतीऽऽऽ-2, गुरु कृपा से झोली भरती॥

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्राय आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसगार महामुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

// धूप //

शुक्लध्यान की भावना भाएँ, अष्ट कर्म को आप नशाएँ।
विद्यार्जव गुरु छाया मिलतीऽऽऽ-2, गुरु कृपा से झोली भरती॥

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्राय आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

// फल //

मोक्ष महल में हम बस जाएँ, यही भावना भाने आये।
विद्यार्जव गुरु छाया मिलतीऽऽऽ-2, गुरुकृपा से झोली भरती॥

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्राय आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

// अर्घ्यं //

अनर्घ्य पद को पाने आये, गुरु चरणों में द्रव्य चढ़ाये।
विद्यार्जव गुरु छाया मिलतीऽऽऽ-2, गुरुकृपा से झोली भरती॥

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर महामुनीन्द्राय आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

// जयमाला //

कोटि-कोटि वंदन करूँ, कोटि-कोटि धरूँ ध्यान।
कोटि-कोटि भक्ति करूँ, कोटि-कोटि श्रद्धान॥

(लय- विद्यासागर गुरुवर श्री को ढूंढ़े ये जग सारा.....)

गुरु वंदना करूँ भाव से, आत्म विशुद्धि होवे।
वरद हस्त मम रहे गुरु का, सब भक्तों में शोभे॥
अनगारी कहलाते गुरुवर-2, छोड़ी दुनिया सारी।
शिष्यानुग्रह कुशल रहे, करते न थारी-मारी॥ 1॥

बोलो विद्या गुरु की जय, बोलो आर्जव गुरु की जय।-2

कलयुग में सतयुग की चर्या, स्वर्ग में चर्चा जारी।
चलते फिरते तीरथ हो गुरु, होवे जयकार तुम्हारी॥
आप शिखर हम पत्थर गुरुवर-2, अज्ञ हैं हम तुम ज्ञानी।
हम पतंग तुम डोर गुरुवर, तुम अमृत हम पानी॥ 2॥

बोलो विद्या गुरु की जय, बोलो आर्जव गुरु की जय।-2

पंचाचार के धारक गुरुवर, षट् आवश्यक पालें।
तीन गुप्ति, दश धर्म धारकर, द्वादश तप को सम्हालें॥

नित्य वंदना करें गुरुवर-2, छत्तीस गुण को ध्यावें।
सदा रहे जयवंत गुरु, सब भावना मिलकर भावें॥ 3॥
बोलो विद्या गुरु की जय, बोलो आर्जव गुरु की जय।-2

सर्वस्व समर्पण तुमको गुरुवर, वीर मरण मम् होवे।
यही भावना यही प्रार्थना, अंतिम क्षण तक होवे॥
महावीर से लगते गुरुवर-2, गुरुद्वार है प्यारा।
धन्य हुये हैं भाग्य हमारे, **ऋषि का** मिला सहारा॥ 4॥
बोलो विद्या गुरु की जय, बोलो आर्जव गुरु की जय।-2

ॐ ह्रूँ श्रीमद आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर की संस्तुति करें, 'ऋषि का' हो शुभ ध्यान।
भक्ति से शक्ति मिले, भक्त बनें भगवान॥
॥ पुष्पाञ्जलि क्षिपामि॥

देश विदेश में ख्याति जिनकी,
फैल रही है अपरंपार।
संयम रूपी पथ पर चलकर,
करते निज-पर का उद्धार।
ऐसे गुरु को हम भक्तों का,
वंदन होवे बारंबार।
वरदहस्त नित मिले ऋषि का,
गुरु आशीष से हो भव पार॥

आचार्य परमेष्ठी पूजन

(लय-आल्हा धुन.....)

// स्थापना //

आर्जवसागर सूरि यतिवर, जन-जन को सिद्धि देते।
धर्मप्रभावक कहलाते हो, तन-मन-धन; दुःख हर लेते।
जन-जन के गुरु हृदय विराजो, गुरुवर मेरे तीर्थ महान।
भवसागर से मैं तर जाऊँ, दे दो गुरुवर यह वरदान॥

ॐ ह्रूँ षट्त्रिंशत गुण सहिताचार्य परमेष्ठी श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वानन।
ॐ ह्रूँ षट्त्रिंशत गुण सहिताचार्य परमेष्ठी श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रूँ षट्त्रिंशत गुण सहिताचार्य परमेष्ठी श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

// जल //

कलशा लाये निर्मल जल का, गुरुवर चरण चढ़ाने को।
गुरु चरणामृत पाने आये, जामन मरण मिटाने को।
जन्म जरा मृतु, रोग मिटाकर, अष्ट कर्म का नाश करो।
'आर्जवसागर' सूरि यतिवर, मम् अभिलाषा पूर्ण करो॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

// चंदन //

तृष्णा मोह क्रोध की अग्नि, अन्तर मन को जला रही।
बहुत काल से भटका हूँ मैं, मेरी मंजिल मिली नहीं।

चरण चढ़ाऊँ चंदन लेकर, भव का आतप-शीघ्र हरो।
'आर्जवसागर' सूरि यतिवर, अंतर मन को तृप्त करो॥

ॐ ह्रूँ मोक्षमार्ग प्रणेता आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

// अक्षत //

कुंदकुंद के समयसार की, लोरी हमें सुनाते हैं।
चर्या मूलाचार ढली है, धर्म ध्वजा फहराते हैं।
अक्षत पुञ्ज अखण्ड चढ़ाऊँ, अक्षय पद के पाने को।
'आर्जवसागर' सूरि यतिवर, मम आशा अब पूर्ण करो॥

ॐ ह्रूँ महावीर प्रतिमूर्ति आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर महा मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

// पुष्प //

सुंदर-सुरभित सुमन खिले हैं, महके ज्ञान की फुलवारी।
हरी-भरी शिष्यों की बगिया, लगती सबको अति प्यारी।
चरण कमल में पुष्प चढ़ाकर, काम बाण अब नाश करो।
'आर्जवसागर' सूरि यतिवर, मम अभिलाषा सब- धन्य करो॥

ॐ ह्रूँ ज्ञान-ध्यान-तप लवलीन आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

// नैवेद्य //

षट्रस व्यंजन भोग किये सब, क्षुधा तृप्त यह नहीं हुई।
नहीं मिटी है तृष्णा मेरी, समता जागृत नहीं हुई॥

रूखा सूखा लेकर गुरुवर, ज्ञानामृत को देते हैं।
'आर्जवसागर' सूरि यतिवर, शांत सुधारस पीते हैं॥

ॐ ह्रूँ जगत् सूरि आचार्य गुरुवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

// दीप //

मोह तिमिर में भटके हैं हम, सत्पथ अब तक न पाया।
रत्नमयी दीपक को लेकर, शरण गुरु की हूँ आया।
मम् आतम का दीप जला दो, गुरु आप हो ज्योतिर्मान।
'आर्जवसागर' सूरि यतिवर, कर दो अब मेरा कल्याण॥

ॐ ह्रूँ मुक्तिपथ प्रदर्शक संतश्रेष्ठ आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

// धूप //

भवसागर में भटक रहे हम, गुरु चरणों में आये हैं।
अष्टकर्म का हनन करें हम, यही भावना लाये हैं।
रागद्वेष को नष्ट करें अब, बँध जाये गुरुवर से डोर।
'आर्जवसागर' सूरि यतिवर, करो उजाला चारों ओर॥

ॐ ह्रूँ आगम अनुयोग रचयिता प.पू. आचार्य प्रवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

// फल //

संयम तप अरु त्याग सु-मूरत, आर्जव गुरुवर पाये हैं।
मोक्ष महाफल पाने को गुरु, शरण तुम्हारी आये हैं।

जिस फल के बिन निष्फल सब कुछ, उस फल को मैं पा जाऊँ।
'आर्जवसागर' सूरि यतिवर, जीवन सफल बना जाऊँ॥

ॐ ह्रूँ अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य प्रवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय महामोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

// अर्घ्य //

संयम रूपी पथ पर चलकर, पा जाऊँ अब उत्तम पद।
मन वच तन से आत्म समर्पण, गुरु आज्ञा में निशदिन रत।
अष्ट गुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध लोक में बस जायें।
'आर्जवसागर' सूरि यतिवर, यही भावना सब भायें॥

ॐ ह्रूँ अध्यात्म योगी वात्सल्यमूर्ति आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

// जयमाला //

महावीर सम हैं गुरु, आर्जवसागराचार्य।
यशोगान गुरुदेव का, सफल करे शुभ कार्य॥

(लय- आर्जव गुरु को नमन हमारा.....)

कोटि कोटि मम् नमन हो गुरुवर, करूँ वंदना हर पल गुरुवर।
करुणा जल वरषा दो गुरुवर, कर को जरा उठा दो गुरुवर॥ 1॥
अगणित गुणमणि धारें गुरुवर, झिलमिल तारों जैसे गुरुवर।
उनको गिनना मुश्किल गुरुवर, हो वह विनती कैसे गुरुवर॥ 2॥
हरते जग अंधियारे गुरुवर, हम से सद्गुण हारे गुरुवर।
मोक्ष मार्ग में शूर हैं गुरुवर, भेदज्ञान भरपूर हैं गुरुवर॥ 3॥
शुभ्र धवल सा जीवन गुरुवर, निर्मल-शुभमय मन हैं गुरुवर।
शुद्धातम में रत हैं गुरुवर, सिद्धों का धर ध्यान गुरुवर॥ 4॥

सागर से गहरे हैं गुरुवर, आसमान से विस्तृत गुरुवर।
खड़े हिमालय से थिर गुरुवर, रहे अडोल अकंप गुरुवर॥ 5॥
मनहर शांत हैं मूरत गुरुवर, सिद्ध प्रभु-सी सूरत गुरुवर।
चलते फिरते तीरथ गुरुवर, फैल रही यश कीरत गुरुवर॥ 6॥
नीलगगन से निर्मल गुरुवर, निज में खोये रहते गुरुवर।
भक्तों की पहचान हैं गुरुवर, कण-कण के भगवान हैं गुरुवर॥ 7॥
सोया भाग्य जगा दो गुरुवर, भव से पार लगा दो गुरुवर।
धर्म-मर्म सिखला दो गुरुवर, मुक्ति पथ दिखला दो गुरुवर॥ 8॥

ॐ ह्रूँ षट्त्रिंशत गुण सहिताचार्य परमेष्ठी श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पुण्यार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर के शुभ सूत्र को, कभी भूल न जायँ।
गुरुवर पायें मोक्ष सुख, तव पद 'ऋषि' भी पायँ॥

॥ पुष्पाञ्जलि क्षिपामि॥

आचार्य परमेष्ठी पूजन

(लय- वंदे गुरुवरम् बोलो विद्यासागरम्...)

// स्थापना //

गुरुवर की वाणी सुनकर के, संसार का प्राणी झूम उठा,
पाकर के गुरु चरणों की रज, मुरझाया सुमन भी फूल उठा।
जो सत्य धर्म पर चले आज, धर भेष दिगम्बर ये गुरुवर,
मम् हृदय विराजो आन गुरु, और शीघ्र ही दो मुझको शिवघर॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वानन।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

// जल //

वैराग्य धारकर के गुरुवर, इस जग को हैं तारण आये,
जिनके स्वागत में तीन लोक के, जीव सभी हैं मुस्काय।
ऐसे गुरु के पद पंकज को हम, खेवट बन छूने आये,
श्री गुरु चरणों की रज धोने, कर में गंगाजल भर लाये॥

ॐ ह्रूँ परमोपकारी संत श्रेष्ठ आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

// चंदन //

क्रोधाग्नि में मन झुलसा, तन को भी मैंने झुलसाया,
हो वशीभूत इस क्रोध अनल के, भावों को भी भटकाया।

भावों की निर्मलता भरने, अब शरण तुम्हारी आये हैं,
निज क्रोधाग्नि की शांति हेतु, चंदन वंदन को लाये हैं॥

ॐ ह्रूँ षट्त्रिंशत गुण सहिताचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

// अक्षत //

जड़ से चेतन, चेतन से जड़, जड़ चेतन कैसा नाता,
जड़ कर्म बांधता है सबके, चेतन फिर क्यों है भटकाता।
जड़ कर्म बंध ने ही मुझको, कई भवों भवों है भटकाया,
भव बंधन मेरे कट जाएं, अक्षत ले दास शरण आया॥

ॐ ह्रूँ मोक्षमार्ग प्रणेता आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

// पुष्प //

हे गुरुवर! मैंने मनोभाव की, मदिरा पीकर सुख भोगा,
इच्छा की ज्वाला और बढ़ा, विषयों का मैंने विष घोला।
फिर तृष्णा विष का पान किया, और बना सदा से मतवाला,
मम् हृदय आपके चरणों में, बुझ जाये ये इच्छा ज्वाला॥

ॐ ह्रूँ धर्म प्रभावक आचार्य परमेष्ठी श्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

// नैवेद्य //

ज्यों ज्यों संयम का लक्ष्य धरूं, व्याकुलता बढ़ती जाती है
ये क्षुधारोग इच्छा ज्वाला, फिर शांत नहीं हो पाती है।

इस क्षुधारोग की व्यथा कथा का, अर्ज सुनाने आया हूँ,
हे गुरुवर! मेरी क्षुधा हरो, नैवेद्य चढ़ाने लाया हूँ॥

ॐ ह्रूँ वात्सल्यमूर्ति आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

// दीप //

अज्ञान तिमिर में लिप्त हुआ, पूजन भक्ति को न जानूँ,
मोहान्धकार में फसा हुआ, मैं ईश्वर को न पहचानूं।
अज्ञान तिमिर को नष्ट करन, गुरु ज्ञान ग्रहण को आया हूँ,
निज अंतर की ज्योति जलाने, मैं दीप चढ़ाने आया हूँ॥

ॐ ह्रूँ परमोपकारी संत आचार्य प्रवर श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

// धूप //

चाह नहीं है दुनिया में, कि राज्य सम्पदा मिल जाये,
परवाह नहीं धन दौलत की, वैभव हमारा भी बढ़ जाये।
पर चाह मुझे इस जीवन की, ये जिनभक्ति में रम जाए,
गुरु चरणन धूप बने तन की, निज अष्टकर्म सब जल जाएँ॥

ॐ ह्रूँ रत्नत्रय धारक आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

// फल //

गुरु शरण आपकी आये हैं, हम पूजा का फल पाने आज,
मन में भाव बहुत हैं गुरुवर, शब्द नहीं हैं मेरे पास।

मैं जन्म जन्म से व्याकुल हूँ, उस मोक्ष महा फल पाने को,
गुरु चरण में श्रीफल अर्पित है, उस फल की तृप्ति पाने को ॥

ॐ ह्रूँ षोडसकारण व्रत प्रणेता आचार्य भगवान् श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अर्घ्य ॥

पर में अनादि से रमा रहा, न निज को मैंने पहचाना,
गुरुवर की वाणी सुनकर ही, शिवपुर को मैंने पहचाना।
गुरु चरण शरण में अब तो हम, तप त्याग सीखने आये हैं।
संसार त्याग निज पद पाने, यह अर्घ्य समर्पण लाये हैं ॥

ॐ ह्रूँ धर्म प्रभावक आचार्य परमेष्ठी श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जयमाला ॥

दोहा - वरणूँ श्री जयमालिका, गुरुवर के गुण गाय।
आर्जव गुरु को हो नमन, बार बार सिर नाय ॥

भाद्र शुक्ल अष्टमी को जन्में, ग्राम फुटेरा आँगन में।
सबके मन में खुशियाँ छायीं, फूल खिले हैं बागन में ॥ 1 ॥

माया माँ अरु शिखरचंद जी, पिता आपके कहलाये,
भेष दिगम्बर धारण करके, आर्जवता का सुख पाए ॥ 2 ॥

तीन रतन के सुख पर चलकर, अपने कर्म खिपाये हैं।
मोक्ष मार्ग का पाठ पढ़ाकर, जीवन सफल बनायें हैं ॥ 3 ॥

चौदह प्रान्तों में जाकर के, सद्-उपदेश सिखाये हैं।
महावीर सम चर्या गुरु की, हम सब शीश झुकाये हैं ॥ 4 ॥

गुरु ज्ञानी हैं गुरु ध्यानी हैं, नित पढ़ते जिनवाणी हैं।
भक्त जनो को भगवन् लगते, खिरती गुरु की वाणी है ॥ 5 ॥

जो कहते हैं वो करते हैं, मोक्षमार्ग बतलाते हैं।
कुछ ना लेकर सबकुछ देते, जीवन सफल बनाते हैं ॥6॥
तपा तपा कर काया को गुरु, स्वर्ण रूप सम बना लिया।
निज से निज को त्याग दिया व, जिन को ही निज बना लिया ॥7॥
महामंत्र के पद में तुम हो, हृदयालय के देव तुम्हीं।
वर्धमान अरु वीर हैं गुरुवर, मम् जीवन आधार तुम्हीं ॥8॥
चौथै युग सम सच्चे गुरुवर, ऋषि के मन में बसते हैं।
ऐसे गुरु के चरण कमल में, त्रिकाल वंदन करते हैं ॥9॥
चारों धाम बसे गुरुवर में, कहीं नहीं अब जाना है।
नमन करें 'ऋषि' भक्ति भाव से, शीघ्र शिवालय पाना है ॥10॥

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशत गुण सहिताचार्य परमेष्ठी श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गुण गायें, पूजा करें, करें भक्ति दिन-रात।
गुरुवर का आशीष रहे, सदा हमारे साथ॥
(पुष्पांजलि क्षिपामि)

ॐ

पुण्योदय से गुरु मिले, विद्यार्जव गुरु संत।
ऋषि का जीवन धन्य हो, गुरु रहें जयवंत॥

आर्जव-गुरु-पूजन (लघु)

(लय- सोलहकारण पूजन...)

// स्थापना //

धर्म प्रभावक! संत महान, गुरु आर्जव रत्नों की खान।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥
ज्ञान ध्यान में आप प्रधान, गुरु को ध्याते आठों याम।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट आह्वानन।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

// जल //

क्षीर सिंधु का निर्मल नीर, हरता जन्म-मृत्यु की पीर।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥
रत्नत्रय से शोभित जान, मोक्षमार्ग के सुख की खान।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

// चंदन //

निज आतम के रहते पास, भवाताप का करते नाश।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

सूरीश्वर गुरु आप महान, जीवन शुभमय बनता मान।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

// अक्षत //

भव्य जनों की अद्‌भुत प्यास, अक्षय पद में होवे वास।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥
वाणी गुरु की बड़ी महान, गुरु की मंद मधुर मुस्कान।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

// पुष्प //

विद्यार्जव गुरु रत्न समान, जीवन के उद्धारक मान।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥
गुरुवर गुण; पुष्पों की शान, बन जायें गुरु आप समान।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

// नैवेद्य //

करते जिनवाणी रसपान, गुरु में बसते चारों धाम।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

निज आतम का करते ध्यान, ऐसे गुरु को लाख प्रणाम।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

// दीप //

सब भक्तों की हैं पहचान, कण-कण के हैं गुरु भगवान।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥
विद्या बगिया चेतन खान, गुरुवर तुम हो ज्योतिर्मान।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

// धूप //

ध्यानाग्नि से कर्म जलाऊँ, निज स्वरूप को मैं भी पाऊँ।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥
अष्ट कर्म का करते हान, मन-वच-तन से करूँ प्रणाम।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

// फल //

सरल स्वभावी गुरु महान, आर्जवमय जीवन शुभ जान।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

चेतन रत्नों की है खान, मोक्ष महल में हो शिवधाम।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अर्घ्यं ॥

विद्या गुरु के कुल की शान, ज्ञान-ध्यान में आप महान।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥
चर्या जिनकी बड़ी महान, लगते तीर्थंकर भगवान।
करूँ गुणगान, गाऊँ मैं गुरुवर गुणगान॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ जयमाला ॥

सूरीश्वर! गणनायक! यतीवर! गणधर गुरु! आचार्य प्रभो!
कैसे महिमा गाऊँ गुरु की, अल्प बुद्धि हूँ पूज्य विभो!॥1॥

गुरु कृपा से हमें मिला है, मोक्षमार्ग का शुभ-पथ आज।
गुरु की ऐसी अनुपम भक्ति, होवे अब शिवपुर में राज॥2॥

गुरु की पूजन भक्ति-पूर्वक, भव से हम तिर जाएँगे।
जीवन का कल्याण करेंगे, आठों कर्म नशायेंगे॥3॥

गुरु पूजन से भव्य जीव का, जीवन बनता है सुखमय।
कुंदकुंद के कुन्दन गुरुवर, करते गुरु की जय जय जय॥4॥

लवण त्याग लावण्य मनोहर, **पंचाचार** के धारक हैं।
त्रयगुप्ति का रस पीते हैं, गुरुवर ऐसे साधक हैं॥5॥

दसों धर्म के धारी गुरुवर, रागद्वेष से मुक्त रहे।
षट् आवश्यक पालें गुरुवर, रत्नत्रय से युक्त रहे॥6॥

अनादिकाल से भव में भटका, न भटकूँ; गुरु शरण गहूँ।
हर पल, हर क्षण गुरु को ध्याऊँ, गुरुवर का नित जाप करूँ॥7॥

धरती का कण कण भी कहता, गुरु की महिमा अपरंपार।
बारह तप को तपते गुरुवर, वंदन करते बारंबार॥8॥

संयम रूपी पथ पर चलकर, करते निज-पर का उद्धार।
वरदहस्त नित मिले **ऋषि का**, शीघ्र होय अब भव से पार॥9॥

ॐ ह्रीँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सूरीश्वर गुरुदेव की, मंद मधुर मुस्कान।
महावीर की छवि, गुरु; आगामी भगवान॥
॥ पुष्पाञ्जलि क्षिपामी॥

आर्जव-गुरु-पूजन

(लय- गुरु की छाया... मध्यप्रदेश गान)

// स्थापना //

धर्म प्रभावक! परमोपकारी!, आर्जव गुरु को करूँ नमन।
भक्ति भाव से पूजन करके, तव चरणों की गहूँ शरण॥
अपने ज्ञान-ध्यान-तप बल से, भव्यों का दुःख करें हरण।
'आर्जव' गुरु का अर्चन करके, आह्वानन कर करें नमन॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट आह्वानन।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

// जल //

अनादिकाल से भटक रहा हूँ, तव चरणों में शांति मिली।
जग की आकुलताएँ सारी, ममता का विष पिला रहीं॥
भक्तिभाव का निर्मल जल ले, धारा दे गुरु चरण नमूँ।
धर्म प्रभावक! परमोपकारी!, 'आर्जव' गुरु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

// चंदन //

यह संसार महा दुखदायी, जिसमें कर्म अनादि हैं।
रागद्वेष से बंधे हुये हैं, जन्म मरण की व्याधि हैं॥

गुरु चरणों में विनय भाव का, चंदन लेकर शरण गहूँ।
धर्म प्रभावक! परमोपकारी!, 'आर्जव' गुरु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

// अक्षत //

जितने भी पद पाये मैंने, सबका अब तक नाश हुआ।
नहीं अभी तक मेरा गुरुवर, सच्चे पद में वास हुआ॥
अक्षय पद दो अक्षय लेकर, गुरु महिमा का गान करूँ।
धर्म प्रभावक! परमोपकारी! 'आर्जव' गुरु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

// पुष्प //

अब तक जग में भटका गुरुवर, पर की आश वासना से।
यह संसार सदा दुखदायी, राग रंग उपासना से॥
पुष्प चरण में अर्पित गुरुवर, मुक्ति पथ पर गमन करूँ।
धर्म प्रभावक! परमोपकारी! 'आर्जव' गुरु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

// नैवेद्य //

षट्रस व्यंजन के त्यागी गुरु, निज-आतम के अनुरागी।
भव सागर में भटक रहे हम, धर्म-मार्ग में रुचि जागी॥
क्षुधा तृषा की शांति हेतु, इन इच्छाओं का दमन करूँ।
धर्म प्रभावक! परमोपकारी! 'आर्जव' गुरु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

// दीप //

दीप-चरण में अर्पित करता, रत्नत्रय का दान करें।
उत्तम दीप जलाकर लाया, सच्चे सुख का ज्ञान वरें॥
यशोगान का दीपक लेकर, मन मंदिर को चमन करूँ।
धर्म प्रभावक! परमोपकारी! 'आर्जव' गुरु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

// धूप //

धूप चरण में, लाया गुरुवर, अष्ट कर्म ये दुख देवें।
इतनी शक्ति दे दो गुरुवर, कष्ट सभी हम सह लेवें ॥
गुरु से संयम-मय तप पाकर, अष्ट कर्म का दहन करूँ।
धर्म प्रभावक! परमोपकारी! 'आर्जव' गुरु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

// फल //

नाना फल को लाया चरणों, उत्तम फल को दे देना।
मुक्ति फल के; दाता गुरुवर, मेरी नैया खे देना॥

चरणों आया मुक्ति पाने, रत्नत्रय को शीघ्र गहूँ।
धर्म प्रभावक! परमोपकारी! आर्जव गुरु को नमन करूँ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

// अर्घ्य //

निर्मल जल सा मन है जिनका, चंदन से हैं दिव्य वचन।
अक्षत सम अक्षय श्रद्धा है, सुमनों सम सुंदर है तन॥
नैवेद्य चरित्र ज्ञान है दीपक, वसुविधि करते धूप दहन।
ध्यान सुफल है अर्घ्य समाधि, आर्जव गुरु को नित्य नमन॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

// जयमाला //

सरल स्वभावी सहज हैं, ज्ञान ध्यान लवलीन।
गाऊँ गुरु गुण मालिका, हो जाऊँ स्वाधीन॥

लय- मेरे सिर पर....

गुरु भक्ति की अनुपम महिमा, तव प्रवचन में चर्चित है।
इसीलिए गुणमाल गूँथकर, गुरु चरणों में अर्पित है॥1॥
आत्म साधना करने वाले, गुरु को शीश झुकाता हूँ।
पारस में आर्जवसागर की, पावन गाथा गाता हूँ॥2॥
दमोह जिले की पावन नगरी, फुटेराकलां में जन्म लिया।
भाद्र शुक्ल अष्टमी की तिथि को, मंगलमय है बना दिया॥3॥
शिखरचन्द माया माता ने, पारस रत्न को पाया था।
प्रथम दर्श में गुरु मूरत लख, रत्नत्रय ही भाया था॥4॥
सोनागिरि की भूमि पावन, विद्या गुरु से बने मुनि।
रत्नत्रय संजीवन पाकर, मोक्ष मार्ग के बने धनी॥5॥

गुरुमुख से शुभ नाम है पाया, आर्जवसागर कहलाये।
लोक आपके नाम को गाये, आसमान भी झुक जाये॥6॥
प्रवचन की अनुपम शैली सुन, चकित हुआ है पूर्ण जहान।
विद्यासागर श्रेष्ठ संत के, परम शिष्य हैं आप महान॥7॥
मुक्ति महल के दाता गुरुवर, मोक्ष महल के सुखदाता।
सरल स्वभावी गुण के धारी, जिनशासन के लघु भ्राता॥8॥
यही प्रार्थना करता हूँ, मम्-उर में ज्ञान प्रकाश करो।
चतुर्गति के भव संकट का, हे गुरुवर अब नाश करो॥9॥
तव चरण हृदय में मेरे गुरुवर, मम् हृदय आपके चरणों में।
जब तक शिवसुख न पा जाऊँ, हर श्वास आपके चरणों में॥10॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यम निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर सम मम् गुरु, बनें शीघ्र भगवान।
'ऋषिका' की शुभ भावना, मिले चरण में थान॥
॥ पुष्पाञ्जलि क्षिपामी॥

ज्ञान ध्यान में रत रहें,
जिनशासन की शान।
गुरु गुण के भण्डार हैं,
'आर्जव' गुरु महान॥

गुरु-पूजन (लघु)

(लय- जीवन के किसी... या तुझे सूरज कहूँ...)

।। स्थापना ।।

गुरु महावीर सम जीवन, शुद्धातम में है तन मन ।
गुरुवर का संत समागम, मम् जीवन गुरु समर्पण।
हे महावीर प्रतिमूर्ति! हे धर्म प्रभावक! साधक!
हे सिद्धों के लघुनन्दन! जन-जन के हो आराधक! ॥

ॐ ह्रूं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वानन ।

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रूँ श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

।। जल ।।

समकित धारा बहती है, आर्जव गुरुवर के उर में ।
है अद्भुत सहज सरलता, न आकुलता जीवन में।
भव कालुष धोने को हम, गुरु चरणों में हैं आये।
गुरुवर श्री आर्जवसागर! रत्नत्रय का सुख पाये ॥

ॐ ह्रूं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

// चंदन //

मन को गुरु निर्मल करते, तन को भी शीतल करते ।
आतम में प्रतिक्षण रमते, आतप है भव का हरते ।
शीतलता को हम पाने, गुरु चरणों में हैं आये ।
गुरुवर श्री आर्जवसागर ! रत्नत्रय का सुख पाये ॥

ॐ ह्रूं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

// अक्षत //

गुरु अध्यातम के धारी, तुम सहते परिषह भारी ।
गुरु संगत बड़ी निराली, भरती खुशियों की प्याली ।
अक्षय पद को हम पाने, गुरु चरणों में हैं आये ।
गुरुवर श्री आर्जवसागर, रत्नत्रय का सुख पाये॥

ॐ ह्रूं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

// पुष्प //

गुरुवर का रूप दिगंबर, जिसे कामदेव ललचाते ।
संयम नय की फुलवारी, तप ध्यान से नित महकाते ।
अब कामबाण नश जाये, गुरु चरणों में हैं आये ।
गुरुवर श्री आर्जवसागर, रत्नत्रय का सुख पाये ॥

ॐ ह्रूं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

// नैवेद्य //

सम दर्शन ज्ञान चरित मय, गुरु वचनों की जिनवाणी।
गुरुवर की अद्भुत वाणी, जन-जन की है कल्याणी ।
हम क्षुधा रोग के मेटन, गुरु चरणों में हैं आये।
गुरुवर श्री आर्जवसागर, रत्नत्रय का सुख पाये ॥

ॐ ह्रूं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

// दीप //

तन से मन से वचनों से, कृत कारित अनुमोदन से ।
हम क्षमा करें व करायें, जग के जीवों; जन-जन से ।
अब मोह जाल मिट जाये, गुरु चरणों में हैं आये ।
गुरुवर श्री आर्जवसागर, रत्नत्रय का सुख पाये॥

ॐ ह्रूं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

// धूप //

संयम तप अनुपम शक्ति, विद्यार्जव गुरु मनस्वी ।
सब हिल मिल करके भक्ति, गुरु महाश्रमण ओजस्वी ।
हम अष्ट कर्म के क्षय को, गुरु चरणों में है आये।
गुरुवर श्री आर्जवसागर, रत्नत्रय का सुख पाये ॥

ॐ ह्रूं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

// फल //

गुरु चलते फिरते तीरथ, उत्तम चर्या के धारक ।
निर्मोही निस्पृह साधक, विद्यार्जव गुरु आराधक ।
अब शीघ्र शिवालय पाने, गुरु चरणों में हैं आये ।
गुरुवर श्री आर्जवसागर, रत्नत्रय का सुख पाये ॥

ॐ ह्रूं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय महामोक्ष फल प्राप्ताये फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

// अर्घ्य //

जल चन्दन अक्षत पुष्प, नैवेद्य धूप फल लाया ।
उत्तम है अर्घ्य बनाया, गुरु चरणों में हैं चढ़ाया ।
हम अनर्घ्य पद को पाने, गुरुवर चरणों में आये ।
गुरुवर श्री आर्जवसागर, रत्नत्रय का सुख पाये ॥

ॐ ह्रूं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

// जयमाला //

विद्यार्जव गुरु की कृपा, भवि पर बड़ी महान ।
नमन-नमन गुरुदेव को, 'ऋषि का' करता गान ॥

नमन-नमन श्री आर्जवसागरा, चार्य गुरुवर संत महान ।
विद्या गुरु के शिष्य अनोखे, ज्ञानी ध्यानी गुरु प्रधान ॥ 1 ॥
घोर महा प्रतिभाशाली गुरु, गुरु की महिमा गाता हूँ ।
प्रभु का ज्ञान कराने वाले, गुरु को शीश झुकाता हूँ ॥ 2 ॥
दमोह जिले में ग्राम फुटेरा, धन्य धरा-भू पावन वह ।
जहाँ जन्म ले पारसचंद ने, सार्थ किया है जीवन यह ॥ 3 ॥

माया माँ सह शिखरचंद ने, धार्मिक शिक्षा को देकर ।
भाव बनाया मुनि बनूँगा, गुरु संघ में मैं जाकर ॥ 4 ॥
गुरुवर महिमा छाई जग में, विद्या गुरु के लघुनंदन ।
कुंदकुंद सम अलख जगाये, माँ माया देवी नंदन ॥ 5 ॥
शिरोधार्य गुरु आज्ञा हर पल, गुरु चरणों में अब रहना ।
भाव यही है गुरु चरणों में, मुक्ति श्री को अब गहना ॥ 6 ॥
गुरु के उर में दीप अहिंसा, जगमग करता हर कोना ।
दमक रहा शुभ ध्यान किरण से, गुरुवर धरती के सोना ॥ 7 ॥
नभ में सूरज चाँद सितारे, शोभित हैं जब तक सारे ।
श्रावक मुनि चर्या पालन सह, विद्यार्जव गुरु जयकारे ॥ 8 ॥

ॐ ह्रूं श्रीमद् आचार्य परमेष्ठी भगवन् श्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भक्तों पर उपकार है, 'ऋषि का' बड़ा महान ।
विद्यार्जव गुरुवर रहे, इस युग के भगवान ॥
॥ पुष्पाञ्जलि क्षिपामि ॥

गुरु आज्ञा में,
खुशी जहाँ है।
शिष्य कहीं भी,
सुखी वहाँ है॥

गुरु-पूजन

// स्थापना //

भव्य जनों के तारक गुरुवर, आर्जवसागर हैं प्यारे ।
धर्म ध्यान में रहते निश-दिन चर्या में हैं जो न्यारे ।।
हम सब मिलकर भक्ति भाव से, पूजन करने आये हैं ।
आओ गुरुवर हृदय विराजो, तव गुण हमको भाये हैं ।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्- सन्निधिकरणम्।

// जल //

जन्म जरा व मृत्यु रोग से, अनन्त भव से दुःख पाया ।
धर्म नीर का पान करा दो, भव से पायें छुटकारा ।।
श्री आर्जव गुरु के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार ।
महाव्रती रत्नत्रयधारी, हम सबका कर दो उद्धार ।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

// चंदन //

पर द्रव्यों से सुख न पाया, भव दुःख मेटो, सुख दे दो ।
सबसे उत्तम शीतल वस्तु, जिनवाणी हमको दे दो ।।

श्री आर्जव गुरु के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार ।
महाव्रती रत्नत्रयधारी, हम सबका कर दो उद्धार ।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वापामीति स्वाहा।

।। अक्षत ।।

अक्षत सम मेरा भी गुरुवर, पुनः न हो संसार गमन ।
सब कर्मों का क्षय करके फिर, शिव पद में हो जाय गमन ।।
श्री आर्जव गुरु के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार ।
महाव्रती रत्नत्रयधारी, हम सबका कर दो उद्धार ।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

।। पुष्प ।।

विषयों की मदिरा को पीकर, सुख न अनुभव कर पाये ।
आत्म सुरभि का ज्ञान करा दो, काम मिटे शिव को जायें ।।
श्री आर्जव गुरु के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार ।
महाव्रती रत्नत्रयधारी, हम सबका कर दो उद्धार ।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

।। नैवेद्य ।।

भव-भव में बहु व्यञ्जन खाये, अभी भी तृप्ति नहीं मिली ।
सभी तरह की भूख मिटे बस, ज्ञान कली नित रहे खिली ।।

श्री आर्जव गुरु के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार ।
महाव्रती रत्नत्रयधारी, हम सबका कर दो उद्धार ।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। दीप ।।

मोह जाल में फँसकर मेरी, आत्म ज्योति न जल पायी ।
मोह तिमिर हर ज्योति जला दो, जो ज्योति तुमने पायी ।।
श्री आर्जव गुरु के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार।
महाव्रती रत्नत्रयधारी, हम सबका कर दो उद्धार ।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

।। धूप ।।

ध्यानाग्नि से कर्म जलाकर, निज स्वरूप को हम पायें ।
गुरुवर भक्ति धूप गंध से, शिव में प्रभु गुण महकायें ।।
श्री आर्जव गुरु के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार ।
महाव्रती रत्नत्रयधारी, हम सबका कर दो उद्धार ।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

।। फल ।।

ले श्रीफल बादाम छुहारा, चरणन शीश नवाते हैं ।
दो आशीष कृपा के सागर, शिव पाने गुण गाते हैं ।।

श्री आर्जव गुरु के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार ।
महाव्रती रत्नत्रयधारी, हम सबका कर दो उद्धार ।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

।। अर्घ्य ।।

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ चढ़ाते हैं गुरुवर ।
तव सम अमूल्य पद को पाकर, शिवपद शीघ्र मिले यतिवर ।।
श्री आर्जव गुरु के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार ।
महाव्रती रत्नत्रयधारी, हम सबका कर दो उद्धार ।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। जयमाला ।।

भव विभूति को तज दिया, ममता से गुरु दूर।
जयमाला वर्णन करूँ, भाव भक्ति भरपूर ।।

जयवन्तों जिन वेष हमारे, सन्तों में हैं शुभकर न्यारे ।
हैं अनन्त उपकार तुम्हारे, भव्यों के हैं आप सहारे ।।
फुटेराकलाँ में जन्म लिया है, पथरिया नगर को धन्य किया है।
पिताजी आपके शिखरचन्द जी, सौभाग्यवती हैं मायादेवी ।।
पारसचन्द शुभ नाम है पाया, शास्त्र पठन में ध्यान लगाया ।
जग से जगी असारता है, वैराग्य भाव अति उमड़ पड़ा है ।।
विद्या गुरु की कृपा है पाई, गृह त्याग की लगन समाई ।
सत्रह वर्ष में ब्रह्मचारी बन, क्षुल्लक, ऐलक दीक्षा पाई ।।
सन् अठासी में मुनि बने जब, जग ने खुशियाँ खूब मनाई ।
सोनागिरि में वेष ये धारा, दर्शन करता जग है सारा ।।

एक वर्ष तक मौन है धारा, समयसार मय जीवन प्यारा ।
महावीर सम चर्या वाले, आगम पथ पर चलने वाले ।।
तीर्थंकर पद देने वाला, तीर्थोदय है काव्य रचाया ।
काव्य कुशलता अपूर्व महिमा, कह न सकें हम इसकी गरिमा।।
गुरु के पास है सहज सरलता, वात्सल्य की बहे नर्मदा ।
जो कहते हैं वो करते हैं, आर्जवसागर सब कहते हैं ।।
माह माघ शुक्ला षष्ठी को, वृद्धाचार्य श्री सीमंधर से।
शुभाचार्य पद गुरु ने पाया, जय गुरु भविगण मन हर्षाया।।
तीन-गुप्ति बारह-तप धारें, रत्नत्रय दश धर्म सवारें ।
पंचाचार सुपालनहारे, षट् आवश्यक चर्या वाले ।।
गुरु के पास है जो भी आता, संतोषी वह बनकर जाता ।
पंचमगति के आप सहारे, पंच परावर्तन से तारें ।।
मिले हमें गुरुवर की छाया, इससे कटता भव दुःख सारा ।
सच्चे पथ से शिव पहुँचा दो, भव सिन्धु से पार लगा दो ।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। दोहा ।।

गुरुवर की महिमा महा, कहें शक्य ना होय ।
अल्पमति हम क्या कहें, दीप सूर्य सम होय ।।

।। पुष्पाञ्जलि क्षिपामि।।

गुरु पूजन

कवि शरद अजमेरा, भोपाल

// स्थापना //

आर्जव गुण के श्रेष्ठ सु-धारी, गुरु की छवि अति सुखकारी ।
उदासीन जग से रहते हो, लोका लोक सुहितकारी ॥
चिंतन मनन तत्वचर्चा व, शील व्रतों के धारी हैं ।
लाखों को तुमने तारा है, आज हमारी बारी है ॥
कर्म उदय से घिरे हुए हैं, कहीं न मन सुख पाता है ।
इस जीवन के दुख सागर में, कहीं न मिलती साता है ॥
आर्जव गुरुवर तव चरणों में, कोटि-कोटि हो मम् वंदन ।
उर के आसन आन विराजो, करते गुरु पद की पूजन ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वानन।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

// जल //

जन्म जरा के दुख है भारी, बार-बार तन जन्मा है ।
आत्मा मेरी अजर अमर है, कभी न इसको मरना है ॥
जन्म, जरा व मृत्यु छूटे, यही भावना भाते हैं ।
इसीलिए गुरु चरणों में हम, प्रासुक नीर चढ़ाते हैं ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

// चंदन //

गुरु कृपा बिन मन अटका है , भव भव में भटकाता है ।
शीतलता न मिली कहीं भी, भव आताप तपाता है ॥
भवाताप का नाश होय हम, यही भावना भाते है ।
इसीलिए गुरु चरणों में हम, शीतल चंदन लाते हैं॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

// अक्षत //

बिखरा बिखरा सा रहता मन, जिनवाणी भी न भाती ।
बिन पतवार के मेरा जीवन, विषयों में मन ले जाती ॥
अखंड अक्षय पद को पाने, यही भावना भाते हैं ।
इसीलिए गुरु चरणों में हम, उज्ज्वल अक्षत लाते हैं ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

// पुष्प //

भव-भव से धधकी है मानो, पावक में घी डाला है।
बुझती न; बढ़ती ही जाती, काम बाण की ज्वाला है ॥
काम बाण विध्वंस होय अब, यही भावना भाते हैं ।
इसीलिए गुरु चरणों में हम, पावन पुष्प चढ़ाते हैं ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

// नैवेद्य //

नाना रस का स्वाद लिया है, व्यंजन रसमय खाए हैं ।
लख चौरासी भव में भटके, तृप्ति कहीं ना पाए हैं ॥
क्षुधा रोग का नाश होय अब, यही भावना भाते हैं ।
इसीलिए गुरु चरणों में हम, शुभ नैवेद्य चढ़ाते हैं ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

// दीप //

अंतस् में है घोर अंधेरा, बाहर दीप जलाये हैं ।
मन में उजियारा हो कैसे, अघ तम बादल छाये हैं ॥
महा मोह के मेटन हेतु, यही भावना भाते हैं ।
इसीलिए गुरु चरणों में हम, शुभमय दीप चढ़ाते हैं ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

// धूप //

निज सुख में ही झूल रहा था, शिव सुख सुध अब आई है।
भटक रहे थे भव वन में हम, मोक्ष मार्ग सुखदाई है ॥
अष्ट कर्म का नाश होय मम्, यही भावना भाते हैं ।
इसीलिए गुरु चरणों में हम, पावन धूप चढ़ाते हैं ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

// फल //

उत्तम सुंदर मीठे फल से , थाल सजाया है गुरुवर ।
गूंथी रत्नों की माला, अब भाव बनाया है गुरुवर॥
मोक्ष महाफल पाने को हम, यही भावना भाते हैं ।
इसीलिए गुरु चरणों में हम, श्रीफल आदि चढ़ाते हैं ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

// अर्घ्य //

अष्ट द्रव्य की थाल गुरुवर, तब चरणों में लाये हैं ।
तव सम सुंदर पद को पाने, चरणों आज चढ़ाये हैं ॥
अनर्घ पद के पाने हेतु, यही भावना भाते हैं ।
इसीलिए गुरु चरणों में हम, अनुपम अर्घ चढ़ाते हैं ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

// जयमाला //

गुरु जगाने आये हैं, जाग सके तो जाग ।
शुभाशीष मिल जाये तो, मान परम सौभाग्य॥

प्रथम गुरु पद में सिर नमता, गुरु बिन हमको ज्ञान न मिलता ।
धर्म ज्योति से करे उजियारा, गुरु चरणन को हृदय में धारा ॥1॥

फुटेरा कलां में जन्म लिया है, दमोह जिले का नाम किया है।
ग्यारह सितंबर सन् सड़सठ में, धर्म मार्ग के हेतु जन्में ॥2॥

शिखरचंद पिता कुल धारी, माया माता हैं सुखकारी।
शुद्ध हृदय निर्मल मन धारी,सत्य ज्योति तुममें है भारी ॥3॥

दमोह जिले में विद्या पाई,बाल्यकाल में बुद्धि बढ़ाई।
बी.ए. तक की शिक्षा पाई ,धर्म मार्ग की रूचि बढ़ाई ॥4॥
उन्नीस दिसंबर सन् चौरासी, व्रत लीना है शुभ अविनाशी।
क्षेत्र पनागर ब्रम्हचर्य धर,साधना पथ पर कदम बढ़ाकर॥5॥
क्षुल्लक दीक्षा जब है पाई, आठ नवम्बर पचासी भाई।
अहार सिद्ध भूमि की गाथा, भव्य पथिक का झुकता माथा॥6॥
मिला ऐलक पद दस जुलाई, सत्तासी सन खूब बधाई।
पावन भूमि थूबोनजी में, करी साधना गुरुवर श्री ने ॥7॥
इकतीस मार्च का शुभ दिन आया, अठासी सन् मंगल छाया।
सोनागिरि में मुनि पद पाया, निज आतम को शुद्ध बनाया ॥8॥
आचार्य पद का गौरव पाया, पच्चीस जनवरी को महकाया।
माघ शुक्ल षष्ठी दिन मानो, आत्मसाधना उन्नत जानो ॥9॥
विद्यासागर गुरु वरदानी, धर्म मार्ग के वे कल्याणी।
गुरु छांव में कदम बढ़ाए, मोक्ष मार्ग में आगे आए॥10॥
ग्रंथ अनेकों रचे सुहाए, धर्म दीप जग में चमकाए।
ज्ञान की गंगा बहाय भारी, तप की महिमा उत्तम न्यारी॥11॥
किए शिष्य अनेकों दीक्षित , किया आत्म पथ है प्रदर्शित।
सुसंघ शोभा अनुपम न्यारी, ज्ञान ज्योति नित जलती भारी॥12॥
ग्रंथों का मंथन है गहरा, तत्वज्ञान का सागर लहरा।
अमृत सी बरसे नित वाणी, भरे भाव से झुकते प्राणी ॥13॥
अहिंसामय है पथ दिखलाया, शांति का संदेश सुनाया।
जिओ और जीने दो नारा, विश्व में गूंजा है शुभ प्यारा॥14॥
तप व त्याग की सोहनी मूरत, सदा सादगी मनहर सूरत।
ममता मोह के गुरु हैं त्यागी, लीन आत्म में रहे विरागी ॥15॥
नर नारी में शिक्षा भारी, ज्ञान की ज्योति हो सुखकारी।
भेदभाव को दूर भगाया, समता का संदेश सुनाया॥16॥

पर्यावरण की रक्षा चिंतन, प्रकृति प्रेम व धर्म का मंथन।
जीव दया का भाव सिखाया, हर प्राणी में जिन दर्शाया ॥ 17 ॥
युवा पीढ़ी को राह दिखाई, धर्म की महिमा है समझाई।
संस्कारों की बात बताते, सरल शब्द में ज्ञान बताते ॥ 18 ॥
आर्जव गुरुवर यशोगान यह, जग में देवे सुसम्मान वह।
चरणों में है शत् शत् वंदन, नित करते गुरु का अभिनंदन ॥ 19 ॥
गुरुवर अब हमको भी तारो, जयमाला गुरुवर स्वीकारो।
'शरद' नित है प्रणाम करता , पद पंकज को हिय में धरता ॥ 20 ॥

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

॥ पुष्पाञ्जलि क्षिपामी ॥

सच्चा जन्म,
धर्म का होता।
जिससे पुनः हि,
जन्म न होता॥

गुरु-पूजन

डॉ. हनुमान सिंह
Ph.D, M.B.A., CA (Ret. ADM)

// स्थापना //

धन्य है जीवन गुरु आपका, गुरु आर्जव हैं बहुत महान।
चरण-कमल हृदय में रख कर, मैं पूजूँ मेरे गुरु महान।।
श्रद्धा से नत-मस्तक होऊँ, याचक बन मैं करूँ आह्वान।
गुरुवर मेरे हृदय पधारो, शुद्ध किया मैंने स्थान।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वानन।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागर जी महामुनीन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

// जल //

सारी नदियाँ मैंने परखी, फिर पाया यह अमृत पेय।
सारा आगम गुरु में जाँचा, बने स्वयं ज्ञाता और ज्ञेय।।
अब किसकी मैं करूँ अपेक्षा, लगे जगत् सारा मुझे हेय।
अब तो शरण मुझे दो दाता, यही बचा एक मेरा ध्येय।।
चरणों में जल अर्पित करके, सदा करूँ मैं उनका ध्यान।
चरण-कमल हृदय में रख कर, मैं पूजूँ मेरे गुरु महान।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

// चंदन //

जन्मों-जन्मों से भटका मैं, पागल-मूढ़ और अभिमानी।
किया नहीं कुछ अब तक मैंने, मुझे हुई मुझ से ग्लानी।।
आपके दर्शन से पहले था, निपट गँवार मैं अज्ञानी।
अब मैं शरणागत हूँ आया, मुझपर कृपा करो ज्ञानी।।
पावन चंदन अर्पित कर मैं; माँगू आपसे सम्यक् ज्ञान।
चरण-कमल हृदय में रख कर, मैं पूजूँ मेरे गुरु महान।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

// अक्षत //

रत्नत्रय की राह कठिन है, सब कहते वह मुश्किल है।
आपने मुझे विश्वास दिलाया, वे कहते जो अटकल है।।
सक्षम होकर चलूँ मैं उस पर, मार्ग आपने दिखलाया।
दो शिक्षा सम्बल अब मुझको, क्यों आपने ठुकराया।।
अक्षत यह स्वीकार करो, हे रत्नत्रय के परम सुजान।
चरण-कमल हृदय में रख कर, मैं पूजूँ मेरे गुरु महान।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

// पुष्प //

मिथ्या-मत निस्सार जानने, गुरु ने ही तो ज्ञान दिया।
कठिन तपस्या कर गुरुवर ने, शल्यों का अवसान किया।।
बड़ा सहारा तिनके का गर, जीवन डूबने वाला हो।
फिर मेरी नैया क्यों डूबे, गुरु जैसा रखवाला हो।।

बार-बार मैं पुष्प चढ़ाऊँ, करूँ गुरु का मैं गुणगान।
चरण-कमल हृदय में रख कर, मैं पूजूँ मेरे गुरु महान।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

।। नैवेद्य ।।

क्षुधा रोग के वशीभूत हो, जीवन व्यर्थ गवाँये हैं।
गुरु आपको पाकर के, जीवन को सफल बनाये हैं।।
आहार चर्या के क्षण देखो, धन्ना सेठ भी घबराता।
क्षुधा नाश का भाव लिये, उस हेतु इन्द्र भी ललचाता।।
मैं भेंट करूँ नैवैद्य गुरु, मम् क्षुधा रोग का हो अवसान।
चरण-कमल हृदय में रख कर, मैं पूजूँ मेरे गुरु महान।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। दीप ।।

धर्म-अधर्म का भेद ना जाना, सम दृष्टि न बन पाई।
सब कोशिश में विफल हो गये, ज्ञान ज्योति न जल पाई।।
गुरु आपकी कृपा बिना, मम् बहुत समय बर्बाद हुआ।
आपके दर्शन से पहले, मम् कोरा वाद-विवाद हुआ।।
दीपक अर्पित सद्चरणों में, दूर करो मेरा अज्ञान।
चरण-कमल हृदय में रख कर, मैं पूजूँ मेरे गुरु महान।।

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

// धूप //

सिंह-शत्रु आदि का भय था, अष्ट-कर्म से भगता था।
उनके ही कुचक्र में फँस कर, उनमें ही नित रमता था।।
गुरु चरणों में आकर मैं, व्रत नियमों को नित पाल रहा।
मैंने व्यर्थ विलम्ब किया यह, दुःख मैंने दिन रात सहा।।
धूप सुगन्धित द्वय चरणों में, चढ़ा करूँ गुरुवर बहुमान।
चरण-कमल हृदय में रख कर, मैं पूजूँ मेरे गुरु महान।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

// फल //

आँखों-से मैं अन्धा था मुझे, सत्य मार्ग ना दिखा कभी।
शत्रु-मित्र वे शाश्वत लगते, लगते थे वे अटल सभी।।
अब उनसे मम् ध्यान हटा, मुझे मोक्ष-महाफल अभिलाषा।
अब मेरा कोई नहीं परिजन, केवल आपसे है आशा।।
मुझ किंकर पर दया करो, स्वीकार करो उत्तम फल-पान।
चरण-कमल हृदय में रख कर, मैं पूजूँ मेरे गुरु महान।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

// अर्घ्य //

सारा जग है माया-रूपी, दिखता कुछ, होता कुछ और।
आप-सा संयम जीवन पाऊँ, मिथ्या-दृष्टि मिटे घनघोर।।
सारे आश्रय पीछे छूटें, रहा नहीं मेरा निज ठोर।
अभय-दान का याचक हूँ मैं, क्षमायाचना करूँ पुरजोर।।

अर्घ सहित मैं स्वयं समर्पित, गुण सम्पन्न हे गुरु प्रधान।
चरण-कमल हृदय में रख कर, मैं पूजूँ मेरे गुरु महान।।
(अर्घ्य सहित मैं सिंह समर्पित, कहते गुर्जर हूँ हनुमान।
चरण-कमल हृदय में रख कर, मैं पूजूँ मेरे गुरु महान।।)

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। जयमाला ।।

है वीतराग की प्रतिमूर्ति, प्रतिक्षण तीर्थंकर प्रतिभाषित।
जो जीते जी आदर्श बने, जिनसे जिन होता परिभाषित॥1॥

सत्-पथ सत्याग्रही श्रीमत, करूणानिधि और कृपा निधान।
गाऊँ मैं गुरु की जयमाला, महा पुण्य वात्सल्य प्रधान॥2॥

पंचम-काल में हे गुरुवर, वसुधा को धन्य बनाई है।
जिन-दीक्षा के पालन में, चतुर्थ-काल चर्या दर्शाई है॥3॥

निः-स्पृह निर्दोष आहार-विहार, तीर्थंकर याद दिलाये हैं।
मूल-गुणों के पालन में, तप-संयम पाठ पढ़ाये हैं॥4॥

निष्कलंक पालन धर्मों की, त्यागी सीख गुरु से आकर।
निर्मल-निर्मोही चर्या को, सीखे भला गुरु से आकर॥5॥

समता संयम के सागर हो, गुणी बता रहे गाकर।
कठिन साधना महाव्रतों की, जैन सीख रहे आकर॥6॥

विनय विवेक में विशाल रहे गुरु, मेरे लिये अधिनायक हो।
दिव्य-देशना के अनुरागी, जिनवाणी गुण गायक हो॥7॥

हे रत्नत्रय के साधक गुरु, तब उनकी महिमा बढ़ाई है।
सम्यक् दर्शन चरित्र दिखा, सुज्ञान की ज्योति जलाई है॥8॥

आप दिगम्बर महागुरु, त्रय गुप्ति समिति के पालक हो।
राग-द्वेष उपसर्ग विजेता, निपुण संघ संचालक हो॥9॥

ज्ञान-विषारद् दोष-निवारक, इन्द्रिय-जयी बलशाली हो।
बरसे कृपा हि सब जग पर, चहूँ ओर यहाँ खुशहाली हो ॥ 10 ॥
जो दीन-हीन कबके जग में, उन सबको गले लगाया है।
मुझे मिले श्री चरण सेव तब, मैंने लक्ष्य बनाया है ॥ 11 ॥
हे मेरे गुरुवर तुम्हें प्रणाम, हे सर्व-श्री सिद्ध के धाम।
हो निर्मल निर्मोही-निष्काम, हे आर्जव तुम्हें प्रणाम।॥ 12 ॥

ॐ ह्रूँ अष्टोत्तरशत गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महामुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

॥ पुष्पाञ्जलि क्षिपामी ॥

आरती संग्रह

।। विद्यार्जव गुरु आरती-1 ।।

लय- भक्ति बेकरार है...

विद्यार्जव गुरु नाम है, देते जग को ज्ञान हैं;
गुरु गुण गाकर करें आरती, नित्य सुबह और शाम हैं।।

विद्याधर का जन्म सदलगा, मल्लप्पा-श्रीमंति नंदन[2]।
ज्ञान गुरु के शिष्य अलौकिक, विद्या गुरुवर को वंदन[2]।।
आर्जव गुरु उपकार है, जिनदीक्षा दातार हैऽऽ
गुरु गुण गाकर... ।। 1।।

पारसचंद का जन्म फुटेरा, शिखरचंद माया नंदन[2]।
विद्या गुरु के शिष्य अलौकिक, आर्जव गुरुवर को वंदन[2]।।
देते सम्यग्ज्ञान हैं, करते जग कल्याण हैंऽऽ
गुरु गुण गाकर... ।। 2।।

महावीर सम चर्या धारी, विद्यार्जव गुरु अनगारी[2]।
'ऋषि का' जीवन धन्य बनाते, रत्नत्रय दें सुखकारी[2]।।
कुंदकुंद सम ज्ञान है, आगम बड़ा महान हैऽऽ
गुरु गुण गाकर... ।। 3।।

ज्ञान ध्यान में रत रहते हैं, जिनशासन की शान गुरु[2]।
विद्यार्जव गुरु शरण हमारी, मोक्षमार्ग के धाम गुरु[2]।।
गुरुवर के गुणगान को, गाते आठों याम हैऽऽ
गुरु गुण गाकर... ।। 4।।

पुण्योदय से गुरु मिले हैं, विद्यार्जव गुरु संत महान[2];
श्रद्धा भक्ति साथ समर्पण, मिले गुरु चरणों में थान[2]।।
सूरीश्वर की अर्चना, लाखों बार प्रणाम हैऽऽ
गुरु गुण गाकर... ।। 5।।

।। आरती-2 ।।

लय-तीर्थ बिहारी गुरुराज..... आज थारी आरती उतारूँ.....

आर्जवसागर जी महाराज आज थारी आरती उतारूँ.....
आरती उतारूँ, थारी मूरत निहारूँ.....2
आर्जवसागर जी महाराज .....

आर्जव गुरु की, महिमा है न्यारी-2
गुरु आशीष का, अतिशय है भारी-2
ज्ञान है अपरंपार ऽऽ आज थारी आरती उतारूँ....
आर्जवसागर जी महाराज..... ॥ 1 ॥

कब से हैं प्यासी अँखियां हमारी-2
वीतराग मूरत अति प्यारी-2
सपना हुआ साकार ऽऽ आज थारी आरती उतारूँ....
आर्जवसागर जी महाराज..... ॥ 2 ॥

चरणों की रज को सिर पर लगाऊँ-2
जनम मरण के कष्ट मिटाऊँ-2
मुक्ति का खोलूँ द्वार ऽऽ आज थारी आरती उतारूँ....
आर्जवसागर जी महाराज..... ॥ 3 ॥

विद्यागुरु के शिष्य हैं कहते -2
महावीर प्रतिमूर्ति से लगते - 2
सबका करो कल्याण ऽऽ आज थारी आरती उतारूँ...
आर्जवसागर जी महाराज..... ॥ 4 ॥

परम शांति छवि मूरत है गुरुवर-2
दया धर्म उद्धारक गुरुवर-2
बतादो अब मोक्ष का द्वार ऽऽ आज थारी आरती उतारूँ....
आर्जवसागर जी महाराज..... ॥ 5 ॥

आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ... 2
आर्जवसागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।।

॥ आरती-3 ॥

धरती खड़ी अम्बर खड़ा जिनके द्वारे,
आरती गुरुवर की उतारो मिलकर सारे।
सूरज जिनका जिनके हैं चाँद सितारे,
आरती गुरुवर की उतारो मिलकर सारे॥

1. भाद्र शुक्ल अष्टमी को धरती पर आये थे,
शिखरचंद मायाबाई संग सब हर्षाये थे,
धन्य हुये भक्त सभी धरा के सारेऽऽऽ
आरती गुरुवर की.....
धरती खड़ी.....

2. तप से तपायके कुन्दन बनाई रे,
आतम ज्ञान की ज्योति जलाई रे,
भक्त कहें गुरुवर ही, प्राण हैं हमारे ऽऽऽ
आरती गुरुवर की.....
धरती खड़ी.....

3. विद्या गुरु से मुनिदीक्षा पद पाये हैं,
आचार्य सीमंधर से, आचार्य बन सुहाये हैं,
साज रहे गुरुवर बिन, मन न हमारे ऽऽऽ
आरती गुरुवर की.....
धरती खड़ी.....

4. गुरुवर सब शिष्यों के मध्य ऐसे लागे रे,
समवशरण के बीच जैसे तीर्थंकर विराजे रे,
लेके दीप घी भरा, धरा पे उजियारे ऽऽऽ
आरती गुरुवर की.....
धरती खड़ी.....

।। आरती-4 ।।

(लय- मेरे सिर पर रख दो गुरुवर,.....)

दीपों की थाल सजाई-2 आर्जव गुरुवर के द्वार।
भक्त उतारे आरती, करके जय-जयकार-2

चौथे काल सरीखा देखो, लगा नजारा यहाँ दिखा।
तीर्थंकर से गुरुवर लगते, समवशरण सा संघ लखा॥
सब आओ-आओ भक्तो ऽऽ-2 अब पाओ पुण्य अपार ऽऽऽ
भक्त उतारें आरती... ॥1॥

जैसे सूरज के आने पर, चाँद सितारे दिखें नहीं।
वैसे गुरु के मुस्काने पर, दुःख के दिन भी टिकें नहीं॥
अब आओ गुरु बस जाओ ऽऽ-2 पापों का हो संहार ऽऽऽ
भक्त उतारें आरती... ॥2॥

धुँआ नहीं न ज्योत दिखे, पर सदा रोशनी होती है।
अध्यातम का दीप जले तो, सदा दिवाली होती है॥
मिथ्यातम हरो हमारा ऽऽ-2 हो करुणा के अवतार ऽऽऽ
भक्त उतारें आरती... ॥3॥

गम की रात अंधेरे में भी, डरे नहीं हमें हिम्मत दो।
आज नहीं कल हल होगा सब, सहने का 'ऋषि' संबल दो॥
बस इतनी सी इच्छा है ऽऽ-2 दे दो सम्यक्त्व फुहार ऽऽऽ
भक्त उतारें आरती... ॥4॥

सूरीश्वर की अर्चना, प्रणाम सौ सौ बार।
विद्यार्जव ऋषि की शरण, करती भव से पार॥

।। आरती-5 ।।

लयः कंचन की थाल सजाई...

गुरुवर को शीश नवायें, श्रद्धा-भक्ति से गायें
हम सब उतारें तेरी आरती... हो गुरुवर ऽऽ जगमग उतारें तेरी आरती

शिखरचन्द के राज दुलारे, माँ माया के प्यारे ऽऽ
पारस जब धरती पर आये, हो गये हर्षित सारे। गुरुवर...
नगरी वह हो गई पावन, फुटेरा कलाँ-मनभावन ऽऽ
हम सब..... हो गुरुवर ऽऽऽ जगमग उतारे तेरी... ॥1॥

मोक्षमार्ग पथ अति मन भाया, छोड़ा घर-परिवारा ऽऽ
विद्यागुरु से दीक्षा लेकर, रत्नत्रय को धारा। गुरुवर...
सोनागिर धरती प्यारी ऽऽ गुरुवर ने दीक्षा धारी ऽऽ
हम सब..... हो गुरुवर ऽऽऽ जगमग उतारे तेरी... ॥2॥

आत्म तत्त्व में लीन सदा हो, स्वपर भेद विज्ञानी ऽऽ
जग में रहकर निज में रहते, शांति मूर्ति वरदानी। गुरुवर...
गुरुवर की त्याग तपस्या ऽऽ करती है जीवन रक्षाऽऽ
हम सब..... हो गुरुवर ऽऽऽ जगमग उतारे तेरी... ॥3॥

धर्म प्रभावक गुरु हमारे, जन जन के हैं प्यारेऽऽ
गुरु पद वंदन से मिटते हैं, जग के कष्ट वे सारे। गुरुवर...
गुरुवर हैं ज्ञानी ध्यानीऽऽ कहते हैं आगम वाणीऽऽ
हम सब..... हो गुरुवर ऽऽ जगमग उतारें तेरी... ॥4॥

विश्वभ्रमण से थककर गुरुवर चरण शरण में आया ऽऽ
ज्योति पुंज के सम्मुख गुरुवर, आत्म ज्योति हूँ लाया। गुरुवर...
भविजन के हो तुम त्राता, चरणों तव शीश झुकाता ऽऽ
हम सब..... हो गुरुवर ऽऽऽ जगमग उतारे तेरी... ॥5॥

।। आरती-6 ।।

जय जय गुरुवर भक्त पुकारें आरती मंगल गाएं।
करके आरती आर्जव गुरुवर, मोह तिमिर नश जाएं।।
गुरुवर के चरणों में नमन, गुरुवर के चरणों में नमन।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।

फुटेराकलाँ में जन्म लिया था, धन्य है माया माता,
शिखरचंदजी पिता तुम्हारे, हर्षित मन मुस्कराता,
नगर में सब जन मंगल गाएं,[2] फूले नहीं समाएं,
करके आरती .....।।1 ।।

सूरज-सा था तेज आपका, नाम पारसचंद पाया,
बीता बचपन आयी जवानी, घर से मन अकुलाया,
ये सब कुछ तो नाशवान है,[2] भाव विराग जगाएं,
करके आरती .....।। 2।।

विद्यासागर गुरुवर ने ये दीक्षा दे उद्धारा,
देख के मन की निर्मलता को, आर्जवसागर कह पुकारा,
चारित्र रथ पर चढ़ गए गुरुवर,[2] मुक्ति वाट निहारे।
करके आरती .....।।3।।

धन्य है जीवन, धन्य है तन मन, मिलकर जो गुण गाएं,
स्वर्ग सम्पदा सब कुछ पाकर, मनुज जन्म फल पाएं।
दिव्य ज्ञान तुमसे हम पाकर,[2] लोक शिखर पा जाएं,
करके आरती .....।।4।।

।। आरती-7 ।।

हम लेकर घृत के दीप, नवायें शीश, नमें गुरुराजा।
श्री आर्जवसागर महाराजा ।।

1. गुरु ग्राम फुटेरा जन्म लियो, माँ मायादेवी को धन्य कियो।
श्री शिखरचंदजी के हर्षे जिया अपारा ।।
श्री आर्जवसागर महाराजा ।।

2. गुरु विद्या अध्ययन करते हैं, गुरु शान्त स्वभावी रहते हैं।
बचपन में पारस चंद, नाम है प्यारा ।।
श्री आर्जवसागर महाराजा ।।

3. गुरु तीन भाई और एक बहिन, नहीं किसी से गुरु को कोई लगन।
सब छोड़ दिया घरवार और परिवारा।।
श्री आर्जवसागर महाराजा ।।

4. गुरु के गुरु विद्यासागर हैं, वे ज्ञान ध्यान में उजागर हैं ।
मुनि दीक्षा लेकर बहुत किया उपकारा ।।
श्री आर्जवसागर महराजा ।।

5. ऐसे गुरु विद्यासागर हैं, जो भरते खाली गागर हैं ।
तव सोनागिरि में वेष दिगम्बर धारा ।।
श्री आर्जवसागर महाराजा ।।

6. गुरु शान्त सुधा बरसाते हैं, गुरु सबके मन को भाते हैं।
देते हैं प्रवचन मीठा बहुत ही प्यारा ।।
श्री आर्जवसागर महाराजा ।।

मुक्तक

मम् गुरु चरण जहाँ पड़े, तीरथ बने महान,
'आर्जव' गुरु की शरण पा, भक्त बने भगवान
महावीर सम मम् गुरु, ऋषि पद चारों धाम।
सिद्धालय गुरु चरण में, कोटि-कोटि प्रणाम।।

भजन संग्रह

।। भजन - 1।।

लय- सुख का दाता सबका साथी.... (मध्यप्रदेश गान)

गुरु की छाया ऽऽऽ गुरु का आशीषऽऽऽ-2
मिलना ये वरदान है।
संयम तप में लीन सदा ये 'आर्जवगुरु' महान हैं॥

1. सुख दुख में ये तारणहारे, भव्यों के आधार हैं।
पंचाचार के पालनहारे, निज में करते ध्यान हैं।
जैनागम का[2] ऽऽऽऽ संस्कार ये अद्भुत कृति महान है।
महावीर सम चर्या वाले, 'आर्जवगुरु' महान हैं॥
गुरु की छाया...

2. गुरुवर महिमा गाऊँ कैसे, मम् शब्दों में जोर नहीं।
सारी दुनियाँ मैंने ढूँढा, गुरुवर तुमसा कोई नहीं।
सोलहकारण[2] ऽऽऽ करवाते, मम् गुरु की ये पहचान है।
करुणा ममता की मूरत मम्, 'आर्जवगुरु' महान हैं।
गुरु की छाया...

3. महाकाव्य तीर्थोदय से ये, जिनवाणी को गाते हैं।
ऐसे गुरुवर के गुण गाकर, चरणों शीश झुकाते हैं।
धर्म प्रभावक[2] ऽऽ गुरुवन्दन मम्, कोटि कोटि प्रणाम है।
अमृतवाणी वर्षाते ये, 'आर्जवगुरु' महान हैं॥
गुरु की छाया...

4. गुरु ज्ञानी हैं, गुरु ध्यानी हैं, अतिभावन गुरु की वाणी है।
गुरु मात-पिता अरु आगम हैं, गुरुवर ही तो जिनवाणी हैं।
गुरुवर प्रवचन[2] ऽऽऽ सुनकर के हो जाता जन कल्याण है।
'ऋषिका' जीवन पावन करने, वाले गुरु महान हैं।
गुरु की छाया...

।। भजन - 2 ।।

लय-कुण्डलपुर में बन गया मंदिर ये बेमिसाल.....

'आर्जव गुरु' के ज्ञान की, महिमा बड़ी विशाल।
गुरुवर के चरण कमल में, वन्दन करें त्रिकाल॥

आर्जव गुरु को हो नमन..... गुरु चरण में मम् वन्दन.....

1. बचपन में तुमने घर द्वार, को है तज दिया,
यौवन को तज के तुमने, वैराग्य धर लिया।
गुरुवर के चारित्र की जग में नहीं मिशाल,
गुरुवर के चरण कमल में वन्दन करें त्रिकाल॥1॥
आर्जव गुरु के ज्ञान की..... गुरुवर के...
आर्जव गुरु को हो नमन..... गुरु चरण में मम् वन्दन.....

2. रत्नत्रय को गुरु ने, जीवन है बनाया,
जगजाल तज दिये सभी, मोह और माया।
जीवन यहाँ पे तुमने अपना लिया सम्हाल,
गुरुवर के चरण कमल में वन्दन करें त्रिकाल॥2॥
आर्जव गुरु के ज्ञान की..... गुरुवर के...
आर्जव गुरु को हो नमन..... गुरु चरण में मम् वन्दन.....

3. निज आत्मा को गुरु ने मन में बिठा लिया।
तप ध्यान को ही गुरु न जीवन बना लिया।
ऋषि ने मुनित्व अपने मन में लिया बिठाल,
गुरुवर के चरण कमल में वन्दन करें त्रिकाल॥3॥
आर्जव गुरु के ज्ञान की..... गुरुवर के...
आर्जव गुरु को हो नमन..... गुरु चरण में मम् वन्दन.....

★★★

विद्यार्जव गुरु चरण में, नत हो बारंबार।
गुरुवर का गुणगान कर, ऋषि बन हो भव पार॥

।। भजन - 3 ।।

तर्ज- ओ बुंदेली के देवता..... कुण्डलपुर के.....

'धर्म प्रभावक' उपकारी, गुरुवर 'आर्जवसागर' हैं महान।
'जैनागम' प्रणेता ऽऽ 'तीर्थोदय'' से किया जगत कल्याण॥

1. फुटेराकलाँ में जन्म लिया है, पथरिया भी धन्य हुआ है
   श्री शिखरचंद, माया माँ, घर खुशियाँ छाईं अपारा।
   पारसचन्द से ऽऽऽ बने मुनि, 'आर्जवसागर' गुरुवर हैं महान।
   'धर्म प्रभावक' ऽऽ.....
   'जैनागम' प्रणेता ऽऽ.....
2. सोनागिरि गुरु विद्यासागर, मुनिदीक्षा ली पारसचंद ने।
   दीक्षा गुरुवर से पाकर, बन श्रमण जगत के दिवाकर।
   गुरुवर निर्ग्रन्थ नायक ऽऽऽ दीक्षा देकर करते जग कल्याण।
   'धर्म प्रभावक' ऽऽ.....
   'जैनागम' प्रणेता ऽऽ.....
3. सन् अठासी में मुनिपद पाकर, धन्य हुये गुरु 'आर्जवसागर'
   गुरु चरण की पावन रज को, माथे पर हम सब लगाकर
   गायें गुरुवर ऽऽगुण गाथा, चरणों में झुकाके अपना माथ
   'धर्म प्रभावक' ऽऽ.....
   'जैनागम' प्रणेता ऽऽ.....
4. जिनशासन का ध्वज लहराया, जब रचा आगम-अनुयोग भी प्यारा।
   'ॐ ध्यान योग' भी अनुपम, देती संस्कार भी उत्तम।
   ऐसे गुरुवर ऽऽऽ के कोमल, पद धरती पर हैं तीरथ समान।
   'धर्म प्रभावक' ऽऽ.....
   'जैनागम' प्रणेता ऽऽ.....

गुरुवर गुण के धाम हैं, मुझमें कुछ न ज्ञान।
श्रद्धा भक्ति से भरा, गाऊँ ऋषि गुणगान॥

।। भजन - 4।।

लय- ऐसे परम दिगंबर.....

हे आत्म सरोवर परमोपकारी, 'आर्जवगुरु' को वंदन है।
चरणों में मम्, अर्पण है, हो ऽऽ हो ऽऽ गुरुवर वाणी पावन है॥

1. 'आर्जव' गुरुवर ध्यान दशा में, सिद्ध प्रभु से लगते हैं
देते हैं जब धर्म देशना, अर्हत् जिन से लगते हैं[2]
हे आत्म सरोवर.....चरणों में मम्.....

2. चौथे युग सम सच्चे गुरुवर, मेरे मन में बसते हैं
नीरस सा लेते आहार पर, सरस मधुर जीवन जीते हैं।[2]
हे आत्म सरोवर.....चरणों में मम.....

3. कुछ न लेकर सब कुछ देते, उदारतम गुरु का उर है,
हम भक्तों को भगवन लगते, गुरुवर 'आर्जवसागर' हैं।[2]
हे आत्म सरोवर.....चरणों में मम्.....

4. श्री गुरुवर का दर्शन मंगल, पाप गलाता सुखदाता
गुरु समागम उत्तम माना, कल्पवृक्ष सा फलदाता।[2]
हे आत्म सरोवर.....चरणों में मम्.....

5. गुरुवर आशीष यूँ हीं "**ऋषि**" पर, सदा आपका बना रहे
'आर्जव' की प्रतिमूर्ति गुरुवर, मन को मेरे तृप्त करे।[2]
हे आत्म सरोवर.....चरणों में मम्.....

6. महंत जन से परिचय गुरु का, गुरु की महिमा क्या कहना
ऐसे गुरु के चरण कमल में, शाश्वत काल मुझे रहना॥[2]
हे आत्म सरोवर.....चरणों में मम्.....

•••

आचार्य श्री के चरण हमें तो, प्राणों से भी प्यारे हैं।
सेवा करो इनकी सदा, ये तो पूज्य हमारे हैं।।

•••

गुरु समर्पित शिष्य को, मोक्ष महल न दूर।
ऋषियों की सेवा करो, पाओ सुख भरपूर॥

।। भजन - 5 ।।

लय- कौन कहता है भगवान आते नहीं.....

आर्जवगुरु, धर्म की शान है।
लगते ऐसे हैं श्री, वीर भगवान हैं ॥-2

1. आर्जवसागर गुरु मेरे मन में बसे
आशीष दे दो प्रभु, अब तारो मुझेऽऽ
आर्जवसागर गुरु... लगते ऐसे...

2. मेरे जीवन का आधार, गुरु आप हो
चिंता कुछ भी नहीं, जब गुरु पास होऽऽ
आर्जवसागर गुरु...

3. गुरुवाणी को भविजन, उस में धारो
गुरु जो भी कहें, उसका पालन करोऽऽ
आर्जवसागर गुरु... लगते ऐसे...

4. आर्जव वाणी के प्यासे हैं भक्त सभी
तृप्ति होती तभी, गुरुवाणी खिरीऽऽ
आर्जवसागर गुरु... लगते ऐसे...

5. अभिलाषा ऋषि, गुरु पूरी करें।
शीघ्र भव पार हो, मोक्ष सुख को वरेंऽऽऽ
आर्जवसागर गुरु... लगते ऐसे...

।। मुक्तक ।।

जिनकी वाणी में महामंत्र हुआ करते हैं,
जिनकी चर्या में ही आगम नेत्र हुआ करते हैं।
हमारे बीच महावीर नहीं तो क्या गम हैं,
हमारे बीच तो आर्जवसागर जी संत हुआ करते हैं।

।। भजन - 6 ।।

लय- हे गुरुवर धन्य हो तुम...

हे गुरुवर! तुम हमको, पापों से बचा लेना।
संयम-व्रत-तप दे करके, निर्मोही कर देना॥

1. भवसागर में वर्षों बीते, गुरु शरण है अभी मिलीऽऽ
   मात-पिता भी मिले अनेकों, किंतु गुरु सम नहीं सहीऽऽ
   सच्चे साथी गुरुवर हैं, भव से पार लगाते हैं।
   हे गुरुवर...
   संयम व्रत तप...

2. गुरुवर तेरी शरण में आया, चरणों की रज को पायाऽऽ
   अब तो कुछ न अच्छा लगता, गुरुद्वार ही लगे प्याराऽऽ
   प्रभु गुरु ही सबकुछ हैं, जिन आगम ये कहता है।
   हे गुरुवर...
   संयम व्रत तप...

3. गुरुवर के उपकार अनंतों, उनको कभी न भूलेंगेऽऽ
   समझ न आता इन उपकारों, के बदले हम क्या देंगेऽऽ
   जीवन ही अर्पित है, गुरुवर के श्री चरणों में।
   हे गुरुवर...
   संयम व्रत तप...

4. चौदह प्रांतों में जा करके, जन-जन का उद्धार कियाऽऽऽ
   सम्यग्दृष्टि बने आत्मा, प्रवचन में है प्रचार कियाऽऽ
   गुरुवाणी अमृत सम, '**ऋषि का**' जीवन सुख पायेऽऽ
   हे गुरुवर...
   संयम व्रत तप...

।। भजन - 7 ।।

लय- धरती की शान तूँ है...

जिनधर्म की हैं शान, आर्जव गुरुवर महान ।
गुरु के चरणों में, शत्-शत् प्रणाम रेऽऽ
जिनधर्म है महान रेऽऽ भूल मत
गुरुदेव को हो प्रणाम रेऽऽऽ ॥

1. जिसने देखो जैनधर्म, इस भव में पा लिया
जिसने देखो वीतराग, प्रभु को अपना लिया
जिसने देखो गुरु चरणों, सिर को झुका लिया
धन्य हो जनमऽऽऽ-2 तूँने पाया जैनधर्म
तेरी आत्मा में स्वयं भगवान हैं रे
जिनधर्म है महान रेऽऽ भूल मत
गुरुदेव को हो प्रणाम रे।

2. तूँ जो चाहे भगवन् सम, रूप को भी पा सके।
तूँ जो चाहे गुरुवर सम, जीवन अपना सके
तूँ जो चाहे प्रभुवर की भक्ति को गा सके
मोक्षपद महानऽऽऽ-2 जिनधर्म की है शान
तेरी आत्मा में स्वयं भगवान हैं रेऽऽऽ
जिनधर्म है महान रेऽऽ भूल मत
गुरुदेव को हो प्रणाम रे।

★★★

मुक्तक

मम् गुरु चरण जहाँ पड़े, तीरथ बने महान,
'आर्जव' गुरु की शरण पा, भक्त बने भगवान
महावीर सम मम् गुरु, ऋषि पद चारों धाम।
सिद्धालय गुरु चरण में, कोटि-कोटि प्रणाम।।

।। भजन - 8।।

लय- लक्ष्य न ओझल...

व्रत संयम को धारण करके, गुरु कदमों पर चल।
मोक्ष महल को प्राप्त करेंगे, आज नहीं तो कल॥

1. छोटे-छोटे नियमों को तूँ, धारण करके देख।
फल पायेगा उत्तम मानो, कार्य भी होगा नेक।
गुरु आशीष मिलेगा हर पल, विश्वासी को बलऽऽऽ
मोक्ष महल को...

2. गुरु महिमा को गाते गाते, लिख जाएँगे लेख।
गुरुवर के उपकार अनन्तों, आकर सम्मुख देख।
भारत भू के भक्त गणों की, सेवा का यह फलऽऽऽ
मोक्ष महल को...

3. व्रत-नियमों को धारण कर लूँ, यही भावना है।
महाव्रती बन करे, सिद्धालय में बसना है।
गुरुवर अब तो अरज हमारी, होवे शीघ्र सफलऽऽऽ
मोक्ष महल को...

4. शरण मिले अब गुरुवर श्री की, तव सम रूप धरूँ।
'ऋषिका' जीवन उत्तम शोभे, गुरु चरणों में रहूँ।
नाम जपूँ मैं हर पल प्रभु-गुरु, भक्ति मेरी अचलऽऽऽ
मोक्ष महल को...

व्रत संयम को धारण करके, गुरु कदमों पर चल।
मोक्ष महल को प्राप्त करेंगे, आज नहीं तो कल॥

हम सबकी हर श्वास में, हो गुरुवर का नाम।
ऋषिवर के गुणगान को, गाऊँ आठों याम॥

।। भजन - 9।।

आर्जव गुरु-गुण गाथा

आर्जव गुण के धारी गुरु की कथा सुनाते हैं हम कथा सुनाते हैं।
गुरु जैसे बनने को, गुरु महिमा गाते हैं हम कथा सुनाते हैं।
अध्यात्म योगी ऋषिराजऽऽ, आर्जवसागर महाराज।

1. मध्यप्रदेश के दमोह जिले में, फुटेराकलां है ग्राम
श्रेष्ठी शिखरचन्द-माया देवी, घर जन्में संतान
सन् अड़सठ में जन्म लिया था, मात-पिता वे धन्य
सन् अठासी में मुनिदीक्षा पा किया स्वयं को धन्य
दीक्षा-शिक्षा लेकर गुरु से मार्ग बढ़ाया है हाँ...
गुरुवर जैसे बनने को, इक कदम बढ़ाया है ....
अध्यात्म योगी... आर्जवसागर...

2. विद्यासागर के उपवन में, शोभित पुष्प अनेक
ज्ञान ध्यान तप त्याग सभी में रहते गुण प्रत्येक
उन सुमनों में एक सुमन है, गुरु आर्जवसागर
उनके ही द्वय चरण कमल में नमता हूँ आकर
संयम को धारण करके, यह मार्ग बताया है हाँ...
गुरुवर जैसे बनने को, इक कदम बढ़ाया है ....
अध्यात्म योगी... आर्जवसागर...

3. ज्ञान ध्यान तप लीन निरंतर, खूब किया स्वाध्याय
जैनागम, तीर्थोदय कृति सब, जन मानस में छाय
किये अनेकों पद अनुवादित, आगम ग्रंथों के
सम्यग्दर्शन रत्न को देकर बने उपकारी वे
आतम हित का पाठ पढ़ा, सौभाग्य जगाया है
गुरुवर जैसे बनने को, इक कदम बढ़ाया है ....
अध्यात्म योगी... आर्जवसागर...

4. चौदह प्रांतों में जाकर है, धर्म प्रचार किया
भव्य जीवों को धर्म सुना, अरु मार्ग प्रशस्त किया
ऐसे गुरु का कभी नहीं हम, भूलेंगे उपकार
गुरुवर जैसे हम बन जायें, बस यही आखिरी चाह
गुरु के गुण को गाकर, ऋषि हर्ष मनाया है हाँ .....
गुरुवर जैसे बनने को, इक कदम बढ़ाया है ....
अध्यात्म योगी... आर्जवसागर...

।। भजन - 10 ।।

लय- आओ हम सब...

आओ हम सब गुरु गुण गाये, आचार्य भगवान के ।
महावीर सम चर्या वाले, जिनशासन की शान के ॥

वन्दे गुरुवरं, बोलो आर्जवसागरंऽऽ
आर्जवसागरम्, बोलो वन्दे गुरुवरं॥

1. आर्जव गुरु की महिमा देखो, जग में अपरंपार है
कृतियाँ गुरु ने रचीं अनेकों, जिन आगम भण्डार हैं
पालन करते करवाते हैं, पंच सुविध आचारों के ।
आगम वर्णित चर्या करते, कल्याणी सागरों के ॥
आओ हम सब महावीर सम...
वन्दे गुरुवरम्...

2. मोक्षमार्ग की राह दिखाने, इस धरती पर आये हैं ।
पतितोद्धारक, श्रमणोद्धारक, आर्जव गुरु कहाये हैं ॥
गुरु लेखन की रचनाओं से, शिक्षा हमको मिलती है ।
श्रद्धा, नेह, समर्पण इनसे, जीवन बगिया खिलती है ॥
आओ हम सब महावीर सम...
वन्दे गुरुवरम्...

3. कुंदकुंद की गाथाओं का, गीत गुरुवर गाते हैं ।
समदर्शन का डंका गुरुवर, जग जन बीच बजाते हैं ।
अनंत उपकारी हैं गुरुवर, ऋण कैसे हम चुकाएँगे ।
अनादिकाल से भटके जग में, कैसे शिव को जाएँगे ॥
आओ हम सब महावीर सम...
वन्दे गुरुवरम्...

4. जिन आगम ज्ञानी हैं गुरुवर, भक्त रहे हम अज्ञानी ।
अमृत वाणी को सुनकर, आ जाता आँखों में पानी ॥

जिनवाणी को रखें सुरक्षित, करते धर्म प्रचार हैं।
गुणस्थान व प्रमाण नय से, कहते सूत्र का सार हैं॥
आओ हम सब महावीर सम...
वन्दे गुरुवरम्...

5. मंद-मधुर मुस्कान से गुरुवर, मन मोहित सबका करते।
आत्मध्यान के बल से गुरुवर, जग जन का है मन हरते॥
गुरु बिना भक्तों का जीवन, आँधी तूफां पानी है।
आर्जव गुरु की इस धरती पर, कुंदकुंद सम वाणी है॥
आओ हम सब महावीर सम...
वन्दे गुरुवरम्...

6. तीर्थंकर जब बनेंगे गुरुवर, समवशरण में शोभेंगे।
समवशरण हम दीक्षा लेंगे, मुक्ति वधु को पा लेंगे॥
गुरुवर की है महिमा न्यारी, गुण गाती दुनियाँ सारी।
वरद हस्त बस मिले 'ऋषिका', रहें गुरु मम् उपकारी॥
आओ हम सब महावीर सम...
वन्दे गुरुवरम्...

★★★

है कृपा जिनकी मेरे ऊपर
मेरा जीवन उन्हीं का वरदान है
शान से जीना सिखाया जिननें
गुरुवर आर्जवसागर जी उन्हीं का नाम है।

।। भजन - 11 ।।

लय- बहती ज्ञान की धारऽऽ...

(स्वागत गीत)

हम सबके भाग्य खिले, 'आर्जव' गुरु दर्श मिले
भक्ति के दीप जलेऽऽऽऽ
शत्-शत् वंदन अभिनंदन, हृदय से वंदन अभिनंदन ॥
आये हैं संत महान, है जिनशासन की शान
गाएँ हम स्वागत गानऽऽ
शत्-शत् वंदन अभिनंदन, हृदय से वंदन अभिनंदन ॥

1. आर्जव गुरुवर हैं महान, विद्या बगिया की शान
   देंगे गुरुवर अब ज्ञान, गाएँ हम स्वागत गान
   धन्य नगरी ऽऽऽ धन्य भविजनऽऽ हुई धन्य धरा की शान
   हम सबके...

2. गुरुवर हैं उग्र विहारी, हैं पंच महाव्रत धारी
   संयम के निर्मल जल से, पुलकित जीवन फुलवारी
   ये हैं ज्ञानी, ये हैं ध्यानीऽऽ प्रवचन हैं अमृतधार
   हम सबके...

3. हम गुरुवर के आभारी, जो सुन ली अर्ज हमारी
   'भारत' की पुण्यधरा पर, मिला चौमासा सुखकारी
   त्याग-तप का, माला जप का ऽऽ
   अब देंगे **ऋषि** उपहारऽऽऽ
   हम सबके...
   शत्-शत्...
   हृदय से वंदन अभिनंदन ॥

संतों के आगमन से, सुख का रहे न पार।
संतों का जब मनन हो, लगता जगत असार ॥

।। भजन - 12 ।।

लय- मेरे सिर पर रख दो...

(विहार गीत)

गुरुवर को नमन हो सबका, सब भक्तों के सरताज।
न जाओ न जाओ गुरुवर, मेरे नगर से आजऽऽऽ[2]

1. गुरुवर आपके नगर में आने, से खुशहाली छा गई थी।
घर घर में गुरु चरण पड़ रहे, धर्म की गंगा बह रई थी।
फिर हम भक्तों के मन की-2, सुनलो छोटी सी बातऽऽ
न जाओ...न जाओ...

2. गुरुवर आपसे वादा करते, आपकी बात को मानेंगे।
नियम धरम को पालेंगे और, फास्ट फूड भी तज देंगे।
अब तो मुस्कां दो गुरुवर-2, और दे दो आशीर्वाद
न जाओ...न जाओ...

3. मोक्षमार्ग पर बढ़ता जाऊँ, ऐसी कृपा हम पर कर दो।
प्रभु गुरु की सेवा में निशदिन, सब का तन मन अर्पण हो।
हो जाये मेरे नगर में-2, अब 'ऋषि का' चातुर्मास।
न जाओ... न जाओ...

।। भजन - 13 ।।

लय- समता को धरने वाले...

गुरुवर की कृपा निराली, जग में छाई खुशहाली।
जिन शासन की फुलवारी, प्रभुवर सम है अति प्यारी
गुरुवर की चर्या पावन हैऽऽऽ, लगती है मनभावन हैऽऽऽ

1. गुरु गौरव की कथा सुनायें, गुरु भक्ति में हम रम जायें
गुरुवर के हम गुण को गायें, गुरुवर को हम शीश झुकाएँ
ऋषिवर का अद्‌भुत जीवनऽऽ करता है पावन तन-मन
अब लगा रहे मेरा मन, गुरु सेवा में ही हर दम
गुरुवर को हमारा वंदन हैऽऽ, चरणों में समर्पित जीवन हैऽऽऽ

2. सिद्धों से वे बातें करते, निज आतम में निशदिन रमते।
ठण्डी गर्मी वर्षा सहते, समता को भी धारण करते।
गुरु चरण जहाँ पड़ते हैंऽऽ, भू-रज पावन करते हैं।
जंगल में मंगल करके वे, पुण्य कोरा भरते हैं
गुरुवर की चर्या..., लगती है...
गुरुवर की छवि मनहारी हैऽऽऽ, जीवन की फुलवारी हैऽऽऽ

गुरु-संस्तुति

जग शोभित मेरे गुरुवर हैं, भेष दिगंबर ऋषि मुनि।
यति परमेष्ठी पंचाचारी, जग हितकारी महाकवि।
धर्म प्रभावक समताधारी, आदर्शी गुरु दुखहर्ता।
प्रवचनकारी सुशीलधारी, भव्यों के सुख के कर्ता।
आवश्यकरत, शूरवीर मुनि, पापभीरू अरु अनुभवि।
चलते फिरते तीरथ साधु, ज्ञानी योगी महाव्रती॥
आत्मध्यानी गुरु मंगलकारी, रत्नत्रय के आराधक।
लोकोद्धारक, श्रमण तपस्वी, अनगारी, शिवसुख दायक।
संवेगी यति गुणधामी रु, क्षमामूर्ति चारित्रधनी।
सरल स्वभावी ज्ञानी ध्यानी, निस्वार्थी जिनवर रूपी।
सौम्यमूर्ति समकितधारी रु, उपदेशक सुशिष्य महान।
मोक्षमार्ग के कर्णधार गुरु, एकाहारी ऋषि प्रधान।
परिषहविजयी करुणाधारी, शुद्धोपयोगी संन्यासी।
वात्सल्यमूर्ति पण्डित मुनिवर, मोक्षमार्ग के अभिलाषी।
नग्न दिगंबर वीतराग मुनि, प्रसन्नमुद्रा तेजस्वी।
धैर्यशाली गुरु सन्मार्गी वे, जगत् वंदनीय ओजस्वी।
आशातीत निरारंभी हैं, स्वाध्यायरत हृदय विशाल।
उपदेशक भवतारक योगी, ग्रन्थ रचेता भक्त खुशाल।
पंचाचार विभूषित गुरुवर, परमोपकारी ध्यानी हैं।
मोक्षमार्ग प्रणेता गुरुवर, अनुपम गुरु की वाणी है।
षोडशकारण रहे प्रणेता, जैनागम के आराधक।
आगम अनुयोग के कर्ता, अद्भुत अद्वितीय साधक॥
गुरु उपमायें अनंत है, जिनका कोई न छोर।
'**ऋषि का**' जीवन धन्य हो, गुरु से बाँधे डोर॥

आर्जव-गुरु-वंदना (स्तुति)

1. दमोह जिले में जन्म 'फुटेरा', पिता 'शिखरचन्द' 'माया' माँ,
इन्हें छोड़ पहुँचे 'पारसचंद', 'विद्यासागराचार्य' जहाँ,
दीक्षा-शिक्षा शुभमय पाकर, 'आर्जवसागर' कहलाये,
चर्या देखो उत्तम ऐसी, जग-जन के मन को भाये ॥

2. 'तीर्थोदय', 'जैनागम' आदि, रचनाएँ बहु अर्चित हैं,
रचित अनुपम कृतियां प्यारीं, जन-जन सब में चर्चित हैं,
'आगम-अनुयोग' कृति का, जग भर में सम्मान हुआ,
चलते-फिरते ग्रन्थालय का, 'आर्जवसागर' नाम हुआ ॥

3. कलयुग में सतयुग की चर्या, शिवरमणी के धारक हैं,
त्याग-तपस्या में मम् गुरुवर, सतयुग जैसे साधक हैं,
जिनका यश, चारित्र, ज्ञान का, फैल रहा है अपरंपार,
ऐसे गुरु 'आर्जवसागर' का, हर्षित हो करते जयकार ॥

4. गुणधारी हैं परम पूज्य हैं, गुण अनंत के धाम गुरु,
धर्मध्वजा को फहराते हैं, लगते जैसे वीर प्रभु,
जगत पूज्य श्री 'आर्जवसागर', गुरु को ऋषिका हो वंदन,
'आर्जव' गुरु के श्री चरणों में, शत्-शत् करते अभिनंदन ॥

गुरु स्तुति

आशीष हाथ गुरु का जब से मिला है,
संतोष का कमल जीवन में खिला है॥
निर्दाम ही मिल रही हमको सुवस्तु,
हम बार बार करते गुरु को नमोस्तु॥

जय जिन सन्मति वीर महान,
मोक्ष प्रदायक नित वंदन।
श्री शांतिसागर सूरि प्रधान,
शिवपथ दर्शक मम् वंदन।
श्री ज्ञानसागर सूरि प्रणाम,
महाकवि तव मार्ग परम।
विद्यासागर जी, सीमंधर,
आर्जवसागर सूरि नमन॥

निर्ग्रन्थ बने बिना,
मोक्ष पद संभव नहीं।

।। गुरु श्री आर्जवसागर अष्टक ।।

-लालचंद जी जैन 'राकेश'

1. हे श्रेष्ठ श्रमण! हे महाव्रती, हे रत्नमयी के भागीरथ ।
तुमने जगती को दर्शाया शिवपुर जाने का सच्चा पथ ।।
हे निर्विकार निर्लेप संत, हे महावीर के लघुनन्दन ।
आर्जव गुरुवर को हो वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

2. हे ग्राम फुटेरा के पारस, मंडल दमोह के महारतन ।
श्री शिखरचन्द -मायादेवी की, कोख हुई तुमसे पावन ।।
बचपन में ग्राम पथरिया की, माटी को आप किया चन्दन।
आर्जव गुरुवर को हो वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

3. जग उपवन के सुमन सभी, चुन लेता यमरूपी माली।
यह सत्य पा लिया बचपन में, इक दिन झड़ना जीवन डाली ।।
कालबली से लड़ने को, आरूढ़ हो संयम स्पंदन ।
आर्जव गुरुवर को हो वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

4. आचार्य श्री विद्यासागर से, जीवन में गौरव आया।
क्रमशः संयम सोपानों चढ़, सोनागिरि मुनि पद पाया।।
श्री गुरुवर आशीष दिया, आर्जवनिधि नाम किया अंकन।
आर्जव गुरुवर को हो वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

5. गुरु विद्यानिधि के चरणों में, जिनवाणी का पीयूष पिया ।
ज्ञान-ध्यान-तप के द्वारा, जीवन को कुन्दन बना लिया।।
सूरज-सम दक्षिण गमन किया, चढ़ा शीष गुरु रज चंदन ।
आर्जव गुरुवर को हो वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

6. तमिल, कर्नाटक, महाराष्ट्र को, तेरह वर्ष सान्निध्य दिया ।
'संस्कार जैनागम' का दे, लौट उत्तर आगमन किया ।।
प्रासुक अश्रु गुरुपद धोये, बारम्बार किया वन्दन ।
आर्जव गुरुवर को हो वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

7. हे जिनवाणी माँ के सपूत, हे विद्वानों के धर्म-पिता ।
तुमने मिथ्यात्व नशाया है, बनकर के स्याद्वाद सविता ।।
साहित्य मंजरी गुरुवर की, सुरभित आतम मलयज चंदन ।
आर्जव गुरुवर को हो वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

8. सागर-सी गहराई संग में, मुश्किल हिमगिरि ऊँचाई।
श्री मुनिवर में रहते हैं, दोनों बनकर भाई-भाई ।।
हे गुणसुमनों के नन्दन वन, शत-शत प्रणाम शत-शत वंदन ।
आर्जव गुरुवर को हो वन्दन, शतशः गुरुवर का अभिनंदन ।।

You Tube- Aarjavvani

इस यूट्यूब चैनल पर अहिंसा, संस्कार, शिक्षा आदि अनेक विषयों पर प्रवचन एवं जैनागम ग्रंथों की विभिन्न कक्षाएँ अपलोड हैं।

Instagram- aarjavvani1/vaniaarjav

इस इंस्टाग्राम पेज पर आचार्य भगवन् के सान्निध्य में आयोजित संपूर्ण कार्यक्रमों की फोटोज, वीडियो आदि अपलोड होते हैं।

Facebook- Aarjav vani

इस पर आचार्य श्री ससंघ के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रमों को लाइव किया जाता है एवं कार्यक्रम की फोटोज, वीडियो आदि अपलोड होते हैं।

Website- www.aarjavvani.com

इस वेबसाइट पर गुरुदेव रचित संपूर्ण साहित्यएवं कृतियाँ उपलब्ध हैं।

Whatsapp No.- 9174843674

इस नं. से आप आर्जव वाणी व्हाट्सप चैनल से जुड़कर का अहिंसा, प्रवचन डेली अपडेट एवं प्रभावना आदि की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

Play Store- aarjavvani

इस एप्लिकेशन को डाउनलोड कर इसका साहित्य पढ़कर पुण्य का कोश भर सकते हैं।